छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
माह : माघ-फाल्गुन, संवत् 2079
फरवरी 2023

ओ३म्

अंक 202, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

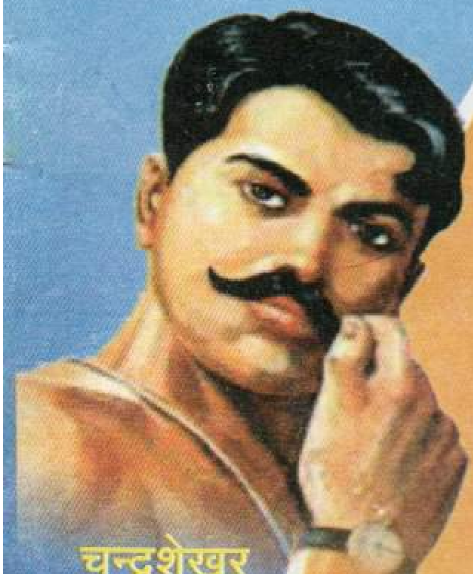

चन्द्रशेखर आजाद

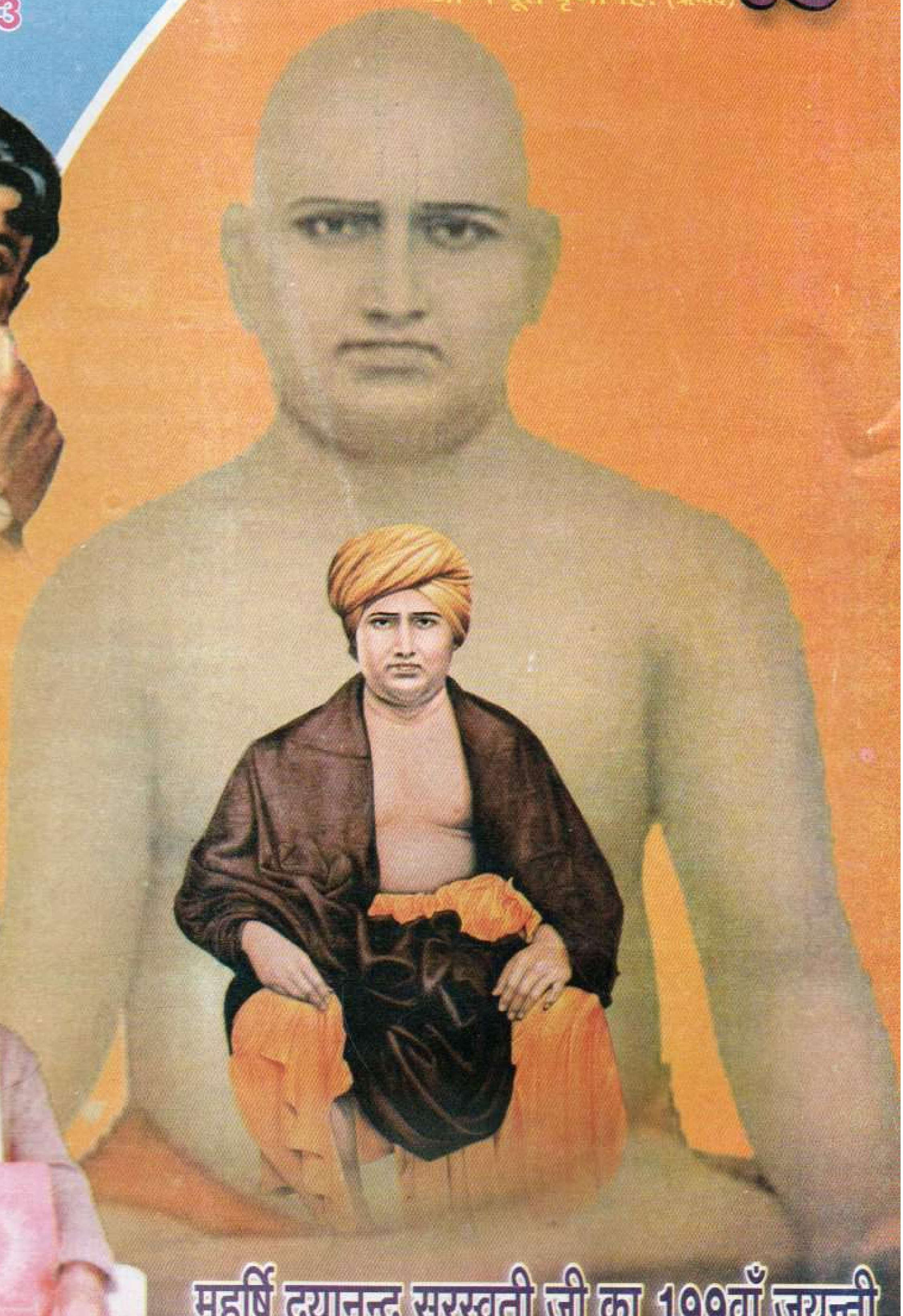

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 199वाँ जयन्ती

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित तुलाराम आर्य हाईस्कूल लवन में सम्पन्न 74वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह एवं बसंत पञ्चमी की झलकियाँ

तुलाराम आर्य कन्या गुरुकुल आश्रम गोहड़ीडिपा (राजपुर) रायगढ़ में सम्पन्न 74वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह की झलकियाँ

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् – २०७९
सृष्टि संवत – १,९६,०८,५३,१२३
दयानन्दाब्द – १९९

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ७०४९२४४२२४)

: प्रबंध सम्पादक :
श्री भुवनेश कुमार साहू
मंत्री सभा
(मो. ७९७४००६५९४)

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री दीपक कुमार पाण्डेय
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९९२६९९०५९१)

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ८१०३१६८४२४

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर,
दुर्ग (छ.ग.) 491001
फोन : (0788) 4031215
e-mail : chhattisgarhsabha@gmai.com

वार्षिक शुल्क-१००-दसवर्षीय-८००-

वर्ष – 18, अंक 3 ओ३म् मास/सन् – फरवरी 2023

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महार्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सज्ञसज्ञकम्,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
1.	सबका अधीश्वर	स्व. रामनाथ वेदालंकार	04
2.	आर्यों के जागरण का महापर्व-बोधरात्रि	आचार्य कर्मवीर	05
3.	परमात्मा की उपासना से आत्मा प्रकाशित होता है।	ओमप्रकाश आर्य	08
4.	पूरी दुनिया में अपने देश का नाम रोशन कर रहे हैं प्रवासी भारतीय	डॉ. वेदप्रताप वैदिक	09
5.	वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा में गुरुकुलों का महत्वपूर्ण योगदान	मनमोहन कुमार आर्य	11
6.	महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की हिन्दी भाषा को देन	कृष्णदेव शास्त्री	14
7.	कितना बदल गया इन्सान	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	17
8.	सदाचार आपकी सम्पदा	स्व. चैतन्यमुनि महात्मा	19
9.	जोशीमठ त्रासदी हमारे लिये खतरे की घंटी	चेतन भगत	21
10.	क्रान्ति के दूत : गणेश शंकर विद्यार्थी	मुकेश कुमार ऋषि वर्मा	23
11.	बुढ़ापा	महापुरुष वचनामृत	24
12.	नास्तिक	ओमप्रकाश बजाज	25
13.	बढ़ो आर्यों (कविता)	स्व. राधेश्याम आर्य	26
14.	स्वामी दिव्यानन्द	तरुण शास्त्री	27
15.	आपसी फूट	नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'	28
16.	दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे.	अनिल आर्य	30
17.	होमियोपैथी से पीलिया (जान्डिस) का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	31
18.	समाचार प्रवाह		33

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई–मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक – आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

वेद
वेदामृत

सबका अधीश्वर

भाष्यकार – स्व. डॉ. रामनाथ वेदालंकार

इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे पृथिव्याः, इन्द्रो अपामिन्द्र इत् पर्वतानाम्।
इन्द्रो वृधामिन्द्र इन्मेधिराणाम्, इन्द्रः क्षेमे योगे हव्य इन्द्रः।।

ऋग् १०.८६.१०

ऋषिः **रेणुः वैश्वामित्रः**। देवता **इन्द्रः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

(**इन्द्र**) इन्द्र प्रभु (**दिव्यः**) द्यु-लोक का (**ईशे**) अधीश्वर है, (**इन्द्रः**) इन्द्र प्रभु (**पृथिव्याः**) पृथिवी का {अधीश्वर है}, (**इन्द्रः**) इन्द्र प्रभु (**अपां**) नदियों का {अधीश्वर है},(**इन्द्रः इत्**) इन्द्र प्रभु ही (**पर्वतानां**) पहाड़ों और मेघों का (अधीश्वर है), (**इन्द्रः**) इन्द्र प्रभु (**वृधां**) समृद्धों का {अधीश्वर है}, (**इन्द्रः इत्**) इन्द्र प्रभु ही (**मेधिराणां**) मेधावियों का {अधीश्वर है}। (**इन्द्रः**) इन्द्र प्रभु (**क्षेमे**) क्षेम के निमित्त {और} (**इन्द्रः**) इन्द्र प्रभु (**योगे**) योग के निमित्त (**हव्यः**) पुकारने योग्य है।

क्या तुम भगवान् के साम्राज्य-विस्तार को जानते हो ? हम छोटे-छोटे राज्यों में बंटे हुए मानव उसके विस्तीर्ण साम्राज्य की कल्पना भी नहीं कर सकते। ब्रह्मांड के एक छोटे-से पिण्ड इस भूण्डल का भी कोई एक मानव अधिपति नहीं है, किन्तु इसमें सैकड़ों राज्य हैं। वे राज्य भी स्थिर नहीं है, किन्तु बनते-बिगड़ते और खण्डों-उपखण्डों में विभक्त होते रहते हैं। आज कोई भूखण्ड किसी एक राजा के अधीन है, तो कल किसी दूसरे की अधीनता में चला जाता है। ऐसी स्थिति में हम विराट् ब्रह्मांड के उस चक्रवर्ती सम्राट् परब्रह्म परमेश्वर के विशालतम साम्राज्य को भला क्या अनुभव कर सकते हैं !

भाइयो ! वह परमेश्वर द्यु-लोक का भी अधीश्वर और पृथिवी-लोक का भी। द्युलोक भी कहने में तो एक लोक के समान भले ही प्रतीत हो, पर असल में उसमें अनन्त लोक विद्यमान हैं। जिसके महत्त्व से हम सुपरिचित हैं, उस सूर्यलोक के अतिरिक्त असंख्यों नक्षत्र-लोक भी उसमें देदीप्यमान हो रहे हैं। अतः जब हम कहते हैं कि परमेश्वर द्यु-लोक का स्वामी है, तब हमारी दृष्टि इस ओर जानी चाहिए कि वह द्यु-लोकवर्ती अगणित दीप्तिमय पिण्डों का महान् शासक है। द्यु-लोक का अधिक चमत्कार तो हम दूरवीक्षण-यन्त्र से भी नहीं देख पाते, पर पृथिवी की विलक्षण सृष्टि तो बहुत कुछ हमारी आँखों के सामने है। अखिल चामत्कारिक पदार्थों से परिपूर्ण यह पृथिवी ही उस दिव्य शासक के शासन की महत्ता को बताने के लिए पर्याप्त है। उदाहरणार्थ हम मेघों, पर्वतो और नदियों पर ही सूक्ष्मतया दृष्टिपात कर लें, तो उसके साम्राज्य की गरिमा को हृदयंगम कर सकते हैं।

वह प्रभु धनिकों का भी अधीश्वर है और मेधावियों का भी। विपुल-से धनों के स्वामी धन-प्राप्ति के लिए उसी के ऋणी हैं। विपुल-से-विपुल मेधावाले मेधा-प्राप्ति के लिए उसी के द्वार पर जाते हैं। वही सर्वाधीश्वर प्रभु योग और क्षेम के लिए सबके पुकारने योग्य है। उसी से हमें **'योग'** अर्थात् अप्राप्त की प्राप्ति होती है, वही क्षेम अर्थात् प्राप्त कर रक्षण कर सकता है। अतः आओ, उसी सकलाधिपति, सर्वनियन्ता प्रभु के साम्राज्य के सदस्य होते हुए हम उसके आदेशों का पालन करें तथा उसकी सच्ची प्रजा कहलाने के अधिकारी बनें।

---

१. मेधा, मतुबर्थ में इरन् प्रत्यय। २. प्राप्तस्य रक्षणं क्षेमः। ३.अप्राप्तस्य प्राप्तिः योगः। ४. आह्वातुं योग्यः।ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च।

सम्पादकीय

आर्यों के जागरण का महापर्व–बोधरात्रि

सहृदय पाठकों,

15 फरवरी को शासन ने ऋषिवर की जयन्ती घोषित की हुई है, इस बहाने चलो शासन प्रशासन के लोग भी अपने स्तर में याद कर लेते हैं, किन्तु आर्यसमाज केवल जन्म दिवस तक सीमित नहीं रहता इसलिए यहां ऋषि की बोधरात्रि भी मनाने की पावन परम्परा चली हुई है। इस अवसर पर आइए हम देखें कि बोध की दिशा में हम कहां तक पहुंचे। इस युग के अद्वितीय समाज सुधारक महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्यसमाज जब कल्याण के कार्यों के कारण ही इतना प्रसिद्ध है। आरंभ में आर्यसमाज के नेताओं में आर्यसमाज के छठे नियम – **संसार का उपकार करने इस समाज का मुख्य उद्देश्य है** का खूब पालन किया और समाज को इस कसौटी पर ही खरा उतरवा दिया। महर्षि दयानन्द की अपनी इच्छा परमानन्द की प्राप्ति थी और इसके लिए कष्टों को बड़ी प्रसन्नता से झेला पर्वतों की कन्दराओं से लेकर भयंकर निर्जन वनों में विहार करने के पश्चात मूलशंकर को मथुरा में ही सच्चे गुरु के दर्शन हुए। संन्यास ले लेने पर वे मूलशंकर से स्वामी दयानन्द सरस्वती हो गए।

अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को लिखकर स्वामी दयानन्द लोगों की कड़ी आलोचना के शिकार बन गये, परन्तु शीघ्र ही उनके द्वारा लिखित उस समय के वायसराय ने सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद करवा कर इसका अध्ययन किया और भविष्यवाणी की थी कि यदि इस ग्रन्थ का प्रचार होता रहा तो अंग्रेजों को सौ वर्षों के भीतर–भीतर इस देश भारत को छोड़ देना पड़ेगा। यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई और इस ग्रन्थ के छपने के सौ वर्षों से पहले ही हमारा देश स्वतन्त्रता प्राप्त कर गया इस विषय में यह बताना आवश्यक है कि स्वतन्त्रता–सेनानियों में लगभग 80 प्रतिशत आर्यसमाजी ही थे।

जब ब्रिटिश सरकार ने भारत में वैदिक राष्ट्रगीत नामक पुस्तक जब्त कर ली तो स्वर्गीय दामोदर सातवलेकर जी ने सरकार को चेतावनी दी कि मेरी समझ में नहीं आया कि वेद की एक छोटी सी पुस्तक के लिए भारत में टिका रहना असम्भव हो जाएगा।

भूतपूर्व वित्तमंत्री श्री मूलचन्द जान एडव्होकेट का कहना था कि – जिस गांव में हमें एक भी आर्य समाजी मिल जाता था, तो वहां हमारा स्वतन्त्रता का नारा कभी दब नहीं पाता था, और ऐसा लगता था कि मानों दयानन्द स्वामी ने हमारे आने से पूर्व ही हमारे कार्य की पृष्ठभूमि वहां बना रखी है। प्रसिद्ध स्वतन्त्रता–सेनानी वीर भगतसिंह, श्री चन्द्रशेखर, रामप्रसाद बिस्मिल आदि हुतात्मा आर्यसमाज की ही उपज थे। शेरे पंजाब लाला लाजपतराय भी जो स्वतन्त्रता–सेनानियों के अग्रणी थे, आर्यसमाज को ही अपनी धर्म की माता मानते थे और महर्षि दयानन्द को धर्मगुरु मानते थे। विधवा विवाह, अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा आदि सामाजिक हित की नई नीतियाँ लागू करके स्वामी दयानन्द ने भारत के जन–जन में नवचेतना भर दी। इस प्रकार समस्त समाज में नवजागरण को फूंककर उन्होंने जो स्थान पाया, वह दयानन्द को जाति–उद्धारक, युगप्रवर्तक बनाने में पूर्णतया पर्याप्त है। स्वयं गुजराती होने पर भी हिन्दी का प्रचार–प्रसार करना उनके राष्ट्रवादी होने का प्रबल प्रमाण है। आने वाली पीढ़ियां शायद ही यह मान पाएंगी कि एक लंगोटधारी दयानन्द अकेले होने पर भी देश मे एवं संसार में इतना जल्दी परिवर्तन लाने में कैसे सफल रहे यदि आज की तुलना मे आपके सामने सौ वर्ष पहले वाला चित्र आ सके तो आप आसानी से अन्दाजा लगा पहुंचे कि पिछले सौ वर्षों में यदि महर्षि दयानन्द द्वारा सामाजिक हित में प्रचार कार्य न हो पाता, तो शायद आज भी हम पिछड़े हुए ही होते।

आज कहीं–कहीं आर्यसमाजों में केवल धार्मिक परिपाटी को ही चलाते जाना काफी समझा जाता है। सामाजिक जागृति, देश और विश्व कल्याण को लक्ष्य मानकर सामाजिक सुधार का कार्य करने वाले आर्यसमाज वास्तव में ही कम होते जा रहे हैं। इस प्रकार धीरे–धीरे आर्यसमाज भी एक रुढ़िवादियों का टोला बनता जा रहा है। इस विडम्बना के विरुद्ध चुनौती देनी होगी, अन्यथा वे लोग जिनके दिल में दयानन्द और आर्यसमाज के प्रति श्रद्धा है वे लोग शीघ्र ही निष्क्रिय हो जाएंगे। कुछ लोग यह भी भूल जाते हैं कि आर्यसमाज एक सम्प्रदाय नहीं आन्दोलन है और आन्दोलन वही कहला सकता है जो किसी न किसी रुप में गतिमान रहे। यह बात सत्य है कि आर्यसमाज की काफी मान्यताओं को प्रशासन ने स्वयं अपना लिया है। लेकिन फिर भी आर्यसमाज की कई ऐसी मान्यताएँ और कार्यक्रम शेष है जिनकी ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। अतः विश्व उत्थान के लिए धार्मिक कुरीतियों, नरबलि, पशुबलि, रंगभेद आदि को दूर करने का विशाल कार्य क्षेत्र है। अपने ही देश में विधर्मियों द्वारा फैलाई हुई अराष्ट्रीयता को दूर करने क्या कम है ? आज भारत के चारों ओर सीमाओं के आसपास विधर्मी अड्डे पनप रहे हैं इन्हें केवल आर्यसमाज ही गिरा सकता है। धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र भारत में कानूनी रुप से इन पर अंकुश लगाना आसान नहीं है।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु ने ज्वालापुर गुरुकुल में भाषण देते हुए यह चेतावनी दी थी कि भविष्य में सब धर्म नष्ट हो जावेंगे जो तर्क की कसौटी पर खरे नहीं उतरेंगे और केवल वही धर्म बचा रह सकता है जिसमें युगधर्म बनने की क्षमता है। अब प्रश्न होता है कि कौन सा धर्म युग धर्म बन सकता है। उत्तर स्पष्ट है कि वैदिक धर्म ही युगधर्म बन सकता है, जो कि सदैव ही तर्क की कसौटी पर

खरा उतरा है । यह वही धर्म है जिसका पुनरुद्धार कर स्वामी दयानन्द ने समयानुसार मान्यताओं को बदलने का साहस किया था। जिसका बीड़ा आर्यसमाज ने उठाया है । अब आवश्यकता है महर्षि दयानन्द के कार्यों को गति देने की । अतः वर्तमान आर्यसमाज आन्दोलन के रुप में सभाओं द्वारा संगठित होती हुई तैयार हो। कोई भी आर्यसमाज किसी एक सभा से अलग न हो । प्रत्येक आर्यसमाज पर किसी न किसी सभा का अंकुश हो ताकि अवांछनीय एवं अवसरवादी लोग केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए प्रभु बनकर बैठे न रहें । इसलिए हर समाज को किसी सभा से संयुक्त होना आवश्यक है समाज की प्रत्येक सम्पत्ति सभा के नाम पर हो और प्रत्येक आर्यसमाज में प्रतिदिन वेद मंत्रों का गायन हो । कई मंचों से अन्य धर्मों का खुल्लम-खुल्ला प्रचार हो रहा है । इस ओर सभाओं को विशेष ध्यान देने की जरुरत है जिससे संसार के कोने-कोने में आर्य धर्म का संदेश भी पहुंच सके और कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का नाद विश्व में गूंज सके । शिवरात्रि का पर्व आगामी फा. कृ. चतुदर्शी 18 फरवरी को बड़ी धूमधाम से मनाया जाने वाला है, इस दिन का आर्यसमाज में विशेष महत्व है सारा देश इसे शिवरात्रि के रुप में मनाता है किन्तु आर्यसमाज इसे बोध रात्रि के रुप में मानता है, क्योंकि यह वही शिवरात्रि है जिसने बालक मूलशंकर को महर्षि दयानन्द बनने की प्रेरणा दी ।

साधारण रोगियों, वृद्धों, शवों, मुर्दों को ले जाते हुए रथियों और सन्यासियों को सहस्त्रों जन प्रतिदिन देखते हैं । किन्तु इन्हीं साधारण दृश्यों ने शाक्य राजकुमार सिद्धार्थ को यह बोध प्रदान किया जिसका प्रभाव संसार के आधे मनुष्यों पर अब तक विद्यमान है । इन्हीं दृश्यों से उद्भूत बुद्ध की दया ने करोड़ों प्राणियों की निर्दय रक्तपात से रक्षा करके संसार में करुणा और सहानुभूति का स्रोत बढ़ाया था । वृक्षों से फल को जमीन पर गिरते हुए प्रतिदिन लाखों लोग देखते हैं किन्तु न्यूटन की दिव्य-चक्षु ने वृक्ष से गिरते सेब के फल को देखकर संसार में गुरुत्वाकर्षण का वैज्ञानिक सिद्धान्त दिया । भोजन बनाते समय हंडी के ऊपर रखे ढक्कन को भाप के दबाव से हिलते हुए लाखों लोगों ने माताओं ने अपने रसोई में देखा होगा और देख भी रहे हैं । किन्तु जेम्सवाट की नजरों ने जब दृश्य देखा तो वाष्प इंजन की परिकल्पना साकार हो उठी । इसी प्रकार अनन्त काल से शिवभक्त भी शिव लिंग पर पूजा के दौरान चढ़ाए गए मिष्ठानों पर उछलकूद मचाते हुए चूहों को भी हजारों बार देखा होगा किन्तु कभी किसी के मन में कभी कोई बात नहीं उठी किन्तु वही दृश्य जब गुजरात प्रान्त के टंकारा नामक छोटे से गांव में निवास कर रहे औदिच्य ब्राह्मण कर्षण जी का महज 14 वर्ष का किशोर मूलशंकर जिसने शिवरात्रि की रात को भूखा रहकर आँखों में पानी का छिटा दे देकर जागते हुए व्रत को इसलिए रखा कि उसे इस रात प्रलंयकर कैलाशवासी शिव का दिव्य दर्शन प्राप्त होगा किन्तु यह क्या ? बालमन में शिवलिंग पर चूहों के उत्पात से बेखबर शिव को देखकर नकली शिव का चिन्तन दृढ़कर असली की खोज में घर परिवार का त्याग कर नदी पहाड़ पर्वत ग्राम नगर शहर जंगल सब छान डाला । अन्त में सच्चे शिव का ज्ञान प्राप्त कर संसार के इतिहास में जो योगदान प्रस्तुत किया वह स्वर्णाक्षरों में अंकनीय है । आइये, इस बोध पर्व पर हम भी अपना कर्त्तव्य बोध प्राप्त कर ऋषिमिशन को आगे बढ़ा अपने जीवन को कृतार्थ करें । वेद भगवान ने सन्देश दिया - **यो जागारः तमृचः कामयन्ते,** जो कर्त्तव्य के प्रति जागरुक है वस्तुतः ऋचाएँ उन्हीं की कामना करती है आइये, जागें ।

– आचार्य कर्मवीर

गौरवात्मक

पूरी दुनिया में अपने देश का नाम रोशन कर रहे हैं प्रवासी भारतीय

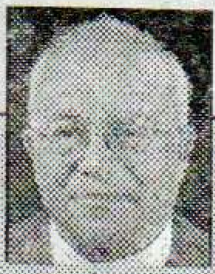

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

जो प्रवासी भारतीय सम्पन्न नहीं हैं, उन्हें भी भारत-यात्रा के लिए विशेष सुविधाएं दी जा सकती हैं और कई प्रतिभाशाली व सफल भारतीयों से अनुरोध किया जा सकता है कि वे भारत आकर मातृभूमि को कृतार्थ करें।

इंदौर में सम्पन्न हुआ 17वां प्रवासी विश्व-शक्ति बनने का प्रतीक है, क्योंकि यह उन लगभग 5 करोड़ भारतीय मूल के लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहा है, जो सारी दुनिया के देशों में बस गए हैं। इस मामले में दुनिया का एक भी देश ऐसा नहीं है, जो भारत का मुकाबला कर सके। भारत के प्रवासियों की संख्या दुनिया में सबसे बड़ी है। मैक्सिको, रूस और चीन के लोग भी बड़ी संख्या में विदेशों में जाकर बस गए हैं लेकिन उनमें और भारतीयों में बड़ा अंतर है। भारत के लोग अपनी सरकारों से तंग होकर विदेश नहीं भागे हैं। वे बेहतर अवसरों की तलाश में वहां गए हैं। वे जहां भी गए है, वहां जाकर उन्होंने हर क्षेत्र में अपना सिक्का जमाया है।

इस समय दुनिया के ऐसे दर्जन भर से ज्यादा देश हैं, जिनके राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, न्यायाधीश आदि भारतीय मूल के हैं। अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक हैं। दुनियां के पांचों महाद्वीपों में एक भी महाद्वीप ऐसा नहीं है, जहां किसी न किसी देश में कोई न कोई भारतीय मूल का व्यक्ति उच्च पदस्थ न हो। इन विदेशियों के बीच भारतीयों को इतना महत्व क्यों मिलता है? क्योंकि वे बुद्धिमान, चतुर और परिश्रमी होते हैं। उदारता और शालीनता उनके रग-रग में बसी होती है।

जिन भारतीयों को डेढ़ सौ-दौ सौ साल पहले बंधुआ मजदूर बनाकर अंग्रेज लोग फिजी, मॉरिशस और सूरिनाम जैसे देशों में ले गए थे, उनकी बात जाने दें और आज के करोड़ों प्रवासी भारतीयों पर नजर डालें तो आप पाएंगे कि वे जिस देश में भी रहते हैं, उस देश के सबसे शिक्षित, मालदार और सभ्य लोग माने जाते हैं। अमेरिका के सबसे सम्पन्न वर्गों में भारतीयों का स्थान अग्रगण्य है। भारतीय लोगों में अपराधियों की संख्या भी सबसे कम होती है। वे जिस देश में, जिस हैसियत में भी रहें, भारत की छवि चमकाते रहते हैं। यह ठीक है कि भारत से आज हर साल लगभग दो लाख लोग विदेशों में जा बसते हैं। वे उन देशों की नागरिकता ले लेते हैं। उनमें से कई मोटी नौकरियों की तलाश में रहते हैं। कई उन देशों में पढ़ते-पढ़ते वहीं रह जाते हैं। कुछ ऐसे भी हैं, जो अपने अपराधों की सजा से बच जाएं, इसलिए भारत की नागरिकता छोड़कर विदेशी नागरिकता ले लेते हैं। प्रतिभा-पलायन के कारण भारत का नुकसान जरूर होता है लेकिन हम यह न भूलें कि ये लोग हर साल भारत में अरबों डॉलर भेजते रहते हैं। पिछले वर्ष १०० अरब डॉलर से भी ज्यादा राशि हमारे प्रवासियों ने भारत भिजवाई है। दुनिया के किसी देश को चीन को भी नहीं उसके प्रवासी इतनी राशि भिजवा पाते हैं।

इस समय दुनिया के अत्यंत शक्तिशाली और सम्पन्न राष्ट्रों में प्रवासी भारतीयों का डंका बज रहा

गौरवात्मक

पूरी दुनिया में अपने देश का नाम रोशन कर रहे हैं प्रवासी भारतीय

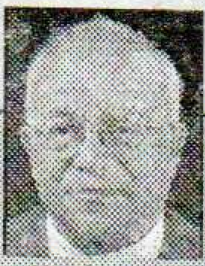

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

जो प्रवासी भारतीय सम्पन्न नहीं हैं, उन्हें भी भारत-यात्रा के लिए विशेष सुविधाएं दी जा सकती हैं और कई प्रतिभाशाली व सफल भारतीयों से अनुरोध किया जा सकता है कि वे भारत आकर मातृभूमि को कृतार्थ करें।

इंदौर में सम्पन्न हुआ 17वां प्रवासी विश्व-शक्ति बनने का प्रतीक है, क्योंकि यह उन लगभग 5 करोड़ भारतीय मूल के लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहा है, जो सारी दुनिया के देशों में बस गए हैं। इस मामले में दुनिया का एक भी देश ऐसा नहीं है, जो भारत का मुकाबला कर सके। भारत के प्रवासियों की संख्या दुनिया में सबसे बड़ी है। मैक्सिको, रूस और चीन के लोग भी बड़ी संख्या में विदेशों में जाकर बस गए हैं लेकिन उनमें और भारतीयों में बड़ा अंतर है। भारत के लोग अपनी सरकारों से तंग होकर विदेश नहीं भागे हैं। वे बेहतर अवसरों की तलाश में वहां गए हैं। वे जहां भी गए है, वहां जाकर उन्होंने हर क्षेत्र में अपना सिक्का जमाया है।

इस समय दुनिया के ऐसे दर्जन भर से ज्यादा देश हैं, जिनके राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, न्यायाधीश आदि भारतीय मूल के हैं। अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक हैं। दुनियां के पांचों महाद्वीपों में एक भी महाद्वीप ऐसा नहीं है, जहां किसी न किसी देश में कोई न कोई भारतीय मूल का व्यक्ति उच्च पदस्थ न हो। इन विदेशियों के बीच भारतीयों को इतना महत्व क्यों मिलता है? क्योंकि वे बुद्धिमान, चतुर और परिश्रमी होते हैं। उदारता और शालीनता उनके रग-रग में बसी होती है।

जिन भारतीयों को डेढ़ सौ-दौ सौ साल पहले बंधुआ मजदूर बनाकर अंग्रेज लोग फिजी, मॉरिशस और सूरिनाम जैसे देशों में ले गए थे, उनकी बात जाने दें और आज के करोड़ों प्रवासी भारतीयों पर नजर डालें तो आप पाएंगे कि वे जिस देश में भी रहते हैं, उस देश के सबसे शिक्षित, मालदार और सभ्य लोग माने जाते हैं। अमेरिका के सबसे सम्पन्न वर्गों में भारतीयों का स्थान अग्रगण्य है। भारतीय लोगों में अपराधियों की संख्या भी सबसे कम होती है। वे जिस देश में, जिस हैसियत में भी रहें, भारत की छवि चमकाते रहते हैं। यह ठीक है कि भारत से आज हर साल लगभग दो लाख लोग विदेशों में जा बसते हैं। वे उन देशों की नागरिकता ले लेते हैं। उनमें से कई मोटी नौकरियों की तलाश में रहते हैं। कई उन देशों में पढ़ते-पढ़ते वहीं रह जाते हैं। कुछ ऐसे भी हैं, जो अपने अपराधों की सजा से बच जाएं, इसलिए भारत की नागरिकता छोड़कर विदेशी नागरिकता ले लेते हैं। प्रतिभा-पलायन के कारण भारत का नुकसान जरूर होता है लेकिन हम यह न भूलें कि ये लोग हर साल भारत में अरबों डॉलर भेजते रहते हैं। पिछले वर्ष १०० अरब डॉलर से भी ज्यादा राशि हमारे प्रवासियों ने भारत भिजवाई है। दुनिया के किसी देश को चीन को भी नहीं उसके प्रवासी इतनी राशि भिजवा पाते हैं।

इस समय दुनिया के अत्यंत शक्तिशाली और सम्पन्न राष्ट्रों में प्रवासी भारतीयों का डंका बज रहा

भारत के लोग अपनी सरकारों से तंग होकर विदेश नहीं भागे हैं। वे बेहतर अवसरों की तलाश में गए हैं। वे जहां भी गए, वहां सिक्का जमाया है है। उन देशों की अर्थव्यवस्था और राज्य व्यवस्था की वे रीढ़ बन चुके हैं। यदि विदेशों में बसे हुए भारतीय आज घोषणा कर दें कि वे भारत वापस लौट रह हैं तो उनमें से कुछ देशों की अर्थव्यवस्था ही ठप्प हो जाएगी, कइयों की सरकारें गिर जाएंगी और कई देशों के विश्वविद्यालय और शोध संस्थान उजड़ जाएंगे। यह ठीक है कि उनमें से कई देशों की जनसंख्या के मुकाबले भारतीय प्रवासियों की संख्या मुट्ठीभर ही है। जैसे अमेरिका में ४४ लाख, ब्रिटेन में १७.५ लाख, संयुक्त अरब अमीरात में ३४ लाख, श्रीलंका में १६ लाख, द. अफ्रीका में १५.६ लाख, सऊदी अरब में २६ लाख, मलेशिया में २९.८ लाख, म्यांमर में २० लाख, कनाडा में १६.८ लाख, कुवैत में १०.२ लाख भारतीय हैं। ज्यादातर देशों में प्रवासियों की संख्या ३ से ४ प्रतिशत ही ह, लेकिन वहां उकना महत्व ३० से ४० प्रतिशत से कम नहीं है। भारतीय लोग अपने मूल देश को वहां से काफी पैसा भिजवाते हैं, लेकिन यह भी तथ्य है कि जिन देशों में वे रहते हैं, उन्हें भी सम्पन्न बनाने में कसर नहीं छोड़ते। भारत के लगभग पांच लाख छात्र- जो विदेशों में हर साल पढ़ने जाते है,- वे भी उन देशों की आय को बढ़ाते ही हैं। प्रवासी भारतीयों की इस सुप्त शक्ति को जगाने का बीड़ा प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी ने उठाया था, २००३ में ! प्रसिद्ध विधिवेत्ता लक्ष्मीमल्ल सिंघवी और राजदूत जगदीश शर्मा के प्रयत्नों से यह प्रवासी संगठन बना है। उसके पहले संघ के वरिष्ठ सदस्य बालेश्वर प्रसाद अग्रवाल की संस्था 'अंतराष्ट्रीय सहयोग परिषद' के जरिए प्रयत्न होता था कि संसार के प्रवासी भारतीयों को अपनी जड़ों से जोड़ा जाए।

अब भारत सरकार ने प्रवासियों की तीन श्रेणियां बना दी हैं। विदेशों में रहने वाले नागरिक (ओसीआई), भारतीय मूल के लोग (पीआईओ)। वह दिन दूर नहीं, जब कई अन्य देशों की तरह भारतीय मूल के लोगों को भी भारत दोहरी नागरिकता दे देगा।

(ये लेखक के अपने विचार हैं।)

मूर्ख की दवा नहीं

शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक् छत्रेण सूर्यातपो
नागेन्द्रो निशितांकु शेन समदो दण्डेन गोगर्दभौ।
व्याधिर्भेषजसङ्ग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विषं
सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम्।।

अग्नि को जल से शान्त किया जा सकता है। सूर्य ताप को छत्र से रोका जा सकता है। हाथी को अंकुश से शांत किया जा सकता है। बैल और गधे को डण्डे से सीधा किया जा सकता है। रोगों का निवारण विविध औषधियों से हो सकता है। विष अनेक मन्त्रों द्वारा उतारा जा सकता है। इस प्रकार शास्त्रों में सभी रोगों की औषधियों का विधान है परन्तु मूर्खों को सज्जन करने की कोई औषधि नहीं है।

तथ्यात्मक

वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा में गुरूकुलों का महत्वपूर्ण योगदान

मनमोहन कुमार आर्य

ऋषि दयानन्द ने विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में प्राचीन भारत में गुरूकुलीय शिक्षा प्रद्धति का उल्लेख कर उसके व्यापक प्रचार कर मानचित्र प्रस्तुत किया था। यह गुरूकुलीय पद्धति प्राचीन भारत में सृष्टि के आरम्भ स महाभारत काल व उसके बाद भी देश व विश्व की एकमात्र शिक्षा पद्धति रही है। इसी संस्कृति में हमारे समस्त ऋषि तथा वैदिक विद्वानों सहित हमारे राम, कृष्ण आदि महापुरूष, राजा-महाराजा व चक्रवर्ती राजा उत्पन्न हुए थे। महाभारत युद्ध के बाद इस शिक्षा पद्धति के संचालन में व्यवधान उत्पन्न हुए और मुस्लिम व अंग्रेजों के राज्य व परतन्त्रता के दिनों में इस शिक्षा पद्धति को समाप्त करने के अनेकानेक प्रत्यक्ष व गुप्त प्रयत्न हुए। यहां तक कि शासक लोगों ने तक्षशिला, नालन्दा तथा चित्रकूट आदि के हमारे प्राचीन संस्कृत साहित्य के भण्डारों वा पुस्तकालयों को जलाकर नष्ट कर दिया। इसके पीछे आतताई मनोवृत्ति के लोगों द्वारा वैदिक धर्म व संस्कृति को नष्ट करना ही प्रतीत होता है। अन्य कोई उद्देश्य उनका दृष्टिगोचर व स्पष्ट नहीं होता। ऐसा होने पर भी वैदिक धर्म, संस्कृति, संस्कृत भाषा और वेद आज भी सुरक्षित हैं। संस्कृत संसार की श्रेष्ठतम व प्राचीनतम भाष ा स्वीकार की जा रही है। संसार में सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद स्वीकार किये गये हैं। ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के सभी रहस्यों का पता देने वाले सर्वोपरि एकमात्र ग्रन्थ वेद ही हैं। जो धर्म व साहित्य के ग्रन्थों में शीर्ष स्थान पर सुशोभित है। वेदों की इस महत्ता को स्थापित करने में वेदों व संस्कृत भाषा के पुनरूद्धारक ऋषि दयानन्द सरस्वती का महत्वपूर्ण व अतुलनीय योगदान है। उन्होंने न केवल वेद और संस्कृत भाषा की रक्षा में योगदान ही किया अपितु वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा तथा उसके पुनरूद्धार में एक प्रकाश स्तम्भ वा टार्च बियर की भूमिका निभाई है। सारा देश व विश्व ऋषि दयानन्द के इन कामों सहित सत्य धर्म का ज्ञान कराने, उसका प्रचार करने सहित धर्म-मत-सम्प्रदायों की अविद्या को दूर करने का पुरूषार्थ करने के लिए उनका ऋणी है।

महर्षि दयानन्द ने अपने अपूर्व सत्यार्थप्रकाश में संस्कृत भाषा की रक्षा एवं गुरूकुलीय शिक्षा पद्धति का उद्धार करने के लिये इसके तीसरे समुल्लास में विस्तार से प्रकाश डाला है और संस्कृत व वेदाध्ययन का पूरा पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया है। ऋषि दयानन्द के विचारों से प्रभावित होकर सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से प्रसिद्ध संन्यासी ने सन् १९०२ में आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के अन्तर्गत हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम में एक गुरूकुल की स्थापना की थी। प्राचीन वैदिक साहित्य के अध्ययन का यह विश्व का अपने समय का प्रमुख संस्थान बना था। इस गुरूकुल ने विगत १२० वर्षों में देश को अनेक वैदिक एवं संस्कृत भाषा के विद्वान दिये हैं। इन विद्वानों में अनेक वेद भाष्यकार एवं संस्कृत शिक्षकों सहित पत्रकार एवं स्वतन्तत्रा सेनानी सम्मिलित हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वयं ही देश की आजादी में योगदान करने वाले स्वतंत्रता संग्राम के एक निर्भीक, साहसी, महान, देशभक्त, अजेय योद्धा एवं सर्वप्रिय महान नेता थे। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रहे रैम्जे मैकडानल्ड ने उन्हें जीवित ईसामसीह की उपमा देकर सम्मानित किया था। गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना व उसके

सफल संचालन से प्रभावित होकर महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के अनुयायियों ने समय समय पर देश भर में अनेक गुरूकुलों की स्थापना व संचालन किया जिससे संस्कृत की रक्षा एवं संस्कृत का बोलचाल व लेखन में प्रयोग करने वाले विद्वानों की संख्या में वृद्धि हुई है। आज आर्यसमाज के अनुयायियों द्वारा देश में लगभग पांच सौ गुरूकुलों का संचालन किया जा रहा है जहां प्रतिवर्ष हजारों संस्कृत के विद्वान तैयार होते हैं जिसका प्रभाव न केवल संस्कृत की रक्षा व उसके साहित्य के विस्तार व उन्नति में होता है अपितु ईश्वरीय ज्ञान वेद पर आधारित सृष्टि के आदि मानव धर्म, उसकी रक्षा होती है।

गुरूकुलों के अधिकांश विद्वान वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार को अपने जीवन का मिशन बनाते हैं और वैदिक साहित्य की वृद्धि करते हैं जिससे देश व विश्व के लोग लाभान्वित होते हैं। यह भी महत्वपूर्ण तथ्य है कि ऋषि दयानन्द और उनके अनुयायी वेदों की शिक्षाओं को धर्म की श्रेष्ठ सर्वमान्य एवं सर्वग्राह्य शिक्षायें सिद्ध कर चुके हैं। वेद मनुष्यों को 'मनुर्भव' अर्थात् मनुष्य बनने का सन्देश देते हैं। श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न मनुष्य जिस प्रक्रिया व पद्धति से बनता है उसी मानव निर्माण पद्धति को धर्म कहा जाता है। इस मानव निर्माण पद्धति में गुरूकुलीय शिक्षा पद्धति का महत्वपूर्ण स्थान है। इस प्रकार हमारे गुरूकुल संस्कृत और वेद का अध्ययन कराकर मनुष्यों को वेद की शिक्षाओं से परिचित करा रहे हैं और उन्हें सच्चा, श्रेष्ठ, धार्मिक, विद्वान मनुष्य बनाकर देश व समाज का कल्याण कर रहे हैं।

देश में संचालित गुरूकुलों ने संस्कृत और वैदिक साहित्य का अध्ययन कराकर वैदिक धर्म, संस्कृति तथा संस्कृत की रक्षा करने का महान कार्य किया है। संसार में सम्प्रति अनेकानेक मत-मतान्तर प्रचलित हैं जो अपनी विद्या-अविद्या युक्त बातों को मानते हैं। वह अपने मत की मान्यताओं को सत्य पर स्थिर करने का प्रयत्न नहीं करते। ऋषि दयानन्द ने सनातन वैदिक धर्म में आये अवैदिक व अन्धविश्वासों ये युक्त विचारों को दूर करने के लिये अपना जीवन लगाया। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ इसका प्रमाण है। इसमें सत्यासत्य का निर्णय किया गया है और सामान्य लोगों का इस विषय में मार्गदर्शन किया गया है। स्वामी जी ने वैदिक धर्म सहित विश्व के लोगों को परिचित कराया है। उनका मिशन अभी पूरा नहीं हुआ है। ईश्वर की भी यही प्रेरणा व सदिच्छा है कि मनुष्य असत्य का त्याग कर सत्य का धारण करे। इसी लिये परमात्मा ने जीवात्माओं के कल्याण के लिये सृष्टि के आरम्भ में वेदों का ज्ञान दिया था। वेदों का ज्ञान प्राप्त कर मनुष्य साधारण से आसाधारण मनुष्य बन सकता है। वेद मनुष्य को सभी दुःखों को दूर कर उसे मोक्षगामी बनाते हैं। भारतवासियों पर ऋषि दयानन्द व उनसे पूर्व के ऋषियों की यह महती कृपा रही है उन्हें उत्तराधिकार में वेद और वैदिक धर्म सहित श्रेष्ठ विचारों व मनुष्य को मोक्ष प्राप्ति में सहायक कर्तव्यों का ज्ञान प्राप्त हुआ है। हमारे गुरूकुल हमारे देशवासियों को संस्कृत व वेदों का अध्ययन कराकर संस्कृत के विद्वान व वेद धर्म प्रचारक उपलब्ध करा रहे हैं। यह हमारे गुरूकुलों का धर्म एवं संस्कृति की रक्षा में महत्वपूर्ण योगदान है।

वेद, धर्म, संस्कृति और संस्कृत भाषा की रक्षा में गुरूकुलों का सर्वोपरि योगदान है। हमें सभी वेदभाष्यकार एवं संस्कृत के बड़े-बड़े विद्वान अपने गुरूकुलों से ही मिले हैं। यदि ऋषि दयानन्द ने गुरूकुलों की स्थापना की प्रेरणा न की होती तो आज हमें गुरूकुलों से मिले संस्कृत के विद्वान न मिल होते जिनकी अनुपस्थिति में वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा न हो पाती। संस्कृत भाषा सभी भाषाओं से प्राचीन, श्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण है एवं संसार की सभी भाषाओं की जननी है। अमेरिका की संस्था नासा ने भी संस्कृत को श्रेष्ठ वैज्ञानिक भाषा स्वीकार किया है। संसार के अनेक देशों में संस्कृत का अध्ययन

कराया जाता है। विदेशों के निष्पक्ष विद्वान संस्कृत भाषा के शब्दों, वाक्य रचना और इसकी भाषागत विशेषताओं पर मुग्ध हैं। विदेशी मुख्यत: यूरोपवासी तो संस्कृत से आकृष्ट हो रहे हैं जबकि हमारी सरकारें व लोग संस्कृत की उपेक्षा कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में हमारे गुरूकुलों का महत्व बढ़ जाता हैं। उन्हें संस्कृत के विद्वान तैयार कर देश विदेश में अध यन हेतु भेजने होंगे जिससे संस्कृत की रक्षा होकर वेद एवं धर्म व संस्कृति की भी रक्षा होगी। गुरूकुलों का मुख्य उद्देश्य ही संस्कृत का प्रचार व वेदाध्ययन कराकर वैदिक धर्म व संस्कृति का दिग्दिगन्त प्रचार व प्रसार करना है। यही आर्यसमाज का भी उद्देश्य एवं लक्ष्य है। इसी की प्रेरणा हमें वेद के **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** शब्दों से मिलती है।

ईश्वर करे कि हमारे सभी गुरूकुल वेद और संस्कृत भाषा के प्रचार का कार्य सुगमता से करते रहे। देश व विश्व के लोग सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग का व्रत ग्रहण करें और सत्य की प्राप्ति के लिये ऋषियों द्वारा प्रदत्त वेद, वेदानुकूल शास्त्र प्रमाण, तर्क एवं युक्तियों सहित आप्तवचनों का सहारा लें।

पता : 196, चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001

जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता, वह कृतघ्नता और महामूर्ख भी होता है। क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिए दे रखे हैं, उसका गुण भूल जाना, ईश्वर ही को न मानना, कृतघ्नता और मूर्खता है। स.प्र.सप्तम् समु. पृष्ठ188

आओ पेड़ लगाएँ

- *पेड़ धरती पर सबसे पुराने जैविक अवयवी (living organism) हैं और ये कभी भी ज्यादा उम्र की वजह से नहीं मरते।*
- *हर साल पांच अरब पेड़ लगाए जा रहे है लेकिन हर साल दस अरब पेड़ काटे भी जा रहे हैं।*
- *एक पेड़ दिन में इतनी ऑक्सीजन देता कि चार आदमी जिंदा रह सकें।*
- *पेड़ों की कतार धूल-मिट्टी के स्तर को ७५ प्रतिशत तक कम कर देती है और ५० प्रतिशत शोर को कम करती है।*
- *एक पेड़ इतनी ठंड पैदा करता है जितनी १ए.सी. १० कमरों में २० घंटों तक चलने पर करता है, जो इलाका पेड़ों से घिरा होता है वह दूसरे इलाकों की तुलना में नौ डिग्री ठंडा रहता है।*
- *पेड़ अपनी १० प्रतिशत खुराक मिट्टी से और ९० प्रतिशत खुराक हवा से लेते हैं।*
- *एक एकड़ में लगे हुए पेड़ एक साल में इतनी सी. ओ. २ सोख लेते हैं जितनी एक कार ४१,००० किमी.चलने पर छोड़ती है।*
- *दुनिया की २० प्रतिशत अमेजन ऑक्सीजन जंगलो के द्वारा पैदा की जाती है ये जंगल ८ करोड़ १५ लाख एकड़ में फैले हूए है।*
- *इंसानों की तरह पेड़ों को भी कैंसर होती है कैंसर होने के बाद पेड़ कम ऑक्सीजन देने लगते हैं।*
- *किसी एक पेड़ का नाम लेना मुश्किल है लेकिन तुलसी, पीपल, नीम और बरगद दूसरों के मुकाबले ज्यादा ऑक्सीजन पैदा करते है।*
- *इस बरसात में कम से कम एक पेड़ अवश्य लगाये।*

7/9 कनकिया संस्कृति अपार्टमेंट, ठाकुर कॉम्पलेक्स, कांदिवली(पूर्व) मुम्बई(महाराष्ट्र) 101

अवदानात्मक

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की हिंदी भाषा को देन

डॉ. उमेश यादव

स्वामी दयानन्द ने 1857 के स्वाधीनता संग्राम को असफल होते देखा था और उसके असफल होने का मुख्य कारण भारतीय समाज में एकता की कमी होना था। स्वामी दयानन्द ने इस कमी को समाप्त करना आवश्यक समझा। उन्होंने चिन्तन-मंथन किया कि अगर भारत देश को एक सूत्र में जोड़ना है तो आवश्यक है। यह रिक्त स्थान अगर कोई भर सकता था तो वह हिंदी भाषा थी। स्वामी दयानन्द द्वारा सर्वप्रथम १९वीं सदी के चौथे चरण में एक राष्ट्र भाषा का प्रश्न उठाया गया और स्वयं गुजराती भाषी होते हुए भी उन्होंने इस हेतु आर्यभाषा (हिंदी) को ही इस पद के योग्य बताया। अपने जीवन काल में स्वामीजी ने भाषण, लेखन, शास्त्रार्थ एवं उपदेश आदि हिंदी में देना आरंभ किये जिससे हिंदी भाषा का प्रचार आरंभ हुआ और सबसे बढ़कर जनसाधारण के समझने के लिए हिंदी भाषा में वेदों का भाष्य किया। इससे हिन्दू साहित्य और भाषा को नये उपादान प्रदान किये और प्रत्येक आर्यसमाजी के लिए हिंदी भाषा को जानना प्रायः अनिवार्य किर दिया गया।

स्वामी जी इससे पहले संस्कृत में भाषण करते थे इसलिए केवल पठित पंडित वर्ग ही उनके विचारों को समझ पाता था। कालान्तर में जब उन्होंने हिंदी भाषा में व्याख्यान प्रारंभ किये तो उससे जन साधारण की उपस्थिति न केवल आधिक हो गई अपितु जनता के लिए उनके प्रवचनों को ग्रहण करना आसान हो गया। स्वामी जी ने अपने संपर्क में आने वाले सभी देशी राजाओं को अपने राजकुमारों को हिंदी के माध्यम से धार्मिक शिक्षा दिलवाने की सलाह दी थी जिससे उनमें देश-भक्ति का सूत्रपात हो सके। स्वामी जी द्वारा अपने सभी ग्रन्थ हिंदी भाषा में रचे गये जैसे सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, वेद-भाष्य आदि। इनके सैकड़ों संस्करण छपे और देश में उनके प्रचार से हिन्दी भाषा के प्रचार को जो गति मिली उसका पाठक सहजता से अनुमान लगा सकते हैं।

1882 में भारतीय शिक्षण संस्थाओं में भाषा के निर्धारण को लेकर 'हन्टर कमीशन' के नाम से कोलकता में आयोग का गठन सर विलियम हंटर की अध्यक्षता में किया गया था। स्वामी दयानन्द ने इस कमीशन के समक्ष हिन्दी को शिक्षा की भाषा निर्धारित करने के लिए आर्यसमाजों को निर्देश दिया कि वे हिन्दी भाषा के समर्थन में हंटर आयोग मे अपनी सम्मति भेजें। फर्रूखाबाद, देहरादून, मेरठ, कानपुर, लखनऊ आदि आर्यसमाजों को भी इस विषय पर कोलकता पत्र भेजने को कहा था।

हिन्दी भाषा भारतीय जनमानस की मानसिक भाषा है इसलिए उसे ही पाठ्यक्रम की भाषा के रूप में स्वीकृत किया जाये ऐसा समस्त आर्यसमाज द्वारा हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए प्रयत्न किया गया था। निश्चित रूप से हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए यह कार्य ऐतिहासिक महनव का था।

स्वामी जी के देहांत के पश्चात् आर्यसमाज के सदस्यों ने हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार में दिन रात एक कर दिया। आर्यसमाज के सदस्यों द्वारा लाखों पुस्तकें हिन्दी भाषा में अगल-अलग विषयों पर

लिखी गई। गद्य, पद्य, काव्य, निबन्ध आदि सभी प्रकार के साहित्य की रचना हिन्दी भाषा में हुई। हजारों पत्र-पत्रिकाओं का हिन्दी भाषा में प्रकाशन हुआ। सैंकड़ों पाठशालाओं, विद्यालयों, गुरूकुलो के माध्यम से हिन्दी भाषा का सम्पूर्ण भारत में ही नहीं अपितु विदेशों मे जैसे मारीशस, फिजी, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में भी हिन्दी भाषा का प्रचार प्रसार हुआ।

आर्य दर्पण (आर्य समाज का सर्वप्रथम हिन्दी पत्र), आर्य भूषण, आर्य समाचार, भारतसुदश प्रवर्तक, वेद प्रकाश, आर्य पत्र, आर्य समाचार, आर्य विनयय, आर्य सिद्धांत, आर्य भगिनी आदि अनेक पत्र तो विभिन्न आर्य संस्थाओं द्वारा २० वीं शताब्दी आरम्भ होने से पहले ही निकलने आरंभ कर दिए थे। २० वीं शताब्दी में इनकी संख्या इतनी थी कि इस लेख में उन्हें समाहित करना संभव नहीं हैं। पाठक इस उल्लेख से समझ सकते हैं कि आर्यसमाज के प्रचार का माध्यम हिन्दी होने के कारण हिंदी भाषा के उत्थान में आर्यसमाज का क्या योगदान था।

स्वामीजी के प्रशंसक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की हिन्दी भाषा को देने से साहित्य जगत भली प्रकार से परिचित है। कालान्तर में मुंशी प्रेमचंद, कहानीकार सुदर्शन, आचार्य रामदेव, बनारसी दास चतुर्वेदी, इंद्र विद्यावाचस्पति, सुमित्रानंदन पन्त, मैथिलीशरण गुप्त, पदम् सिंह शर्मा आदि से आरंभ होकर हरिवंश राय बच्चन, विष्णु प्रभाकर क्षितीश वेदालंकार आदि तक हजारों की संख्या में आर्यसमाज से दीक्षित और अनुप्राणि साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य की रचना की जिससे हिंदी समस्त भारत की साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित हो गई।

स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने पत्र सद्धर्म प्रचारक को एक रात में उर्दू से हिन्दी में परिवर्तित कर दिया, उन्हें आर्थिक हानि अवश्य उठानी पड़ी पर उकने पत्र की प्रसिद्धि को देखते हुए उसे पढ़ पाने की इच्छा ने अनेकों पाठकों को देवनागरी लिपि सीखने के लिए प्रेरित किया।

पत्रिकारिता में नये आयाम आर्यसमाज के सदस्यों के स्थापित किये। पंजाब के सभी प्रसिद्ध अखबार जैसे प्रताप, केसरी, अर्जुन, युगांतर आदि अपने पत्र हिन्दी में ही निकलते थे, जो आर्यसमाजियों ने ही चलाए थे। पंजाब के जन आंचल में उस काल में उर्दू मिश्रित फारसी भाषा बोली जाती थी जिसके प्रचार में उर्दू पत्र जमींदार आदि का पूरा सहयोग था। सैकड़ों गुरूकुलों, डीएवी स्कूल और कॉलेजों में हिन्दी भाषा को प्राथमिकता दी गई और इस कार्य के लिए नवीन पाठ्यक्रम की पुस्तकों की रचना हिन्दी भाषा के माध्यम से गुरूकुल कांगड़ी एवं लाहौर आदि स्थानों पर हुई जिनके विषय विज्ञान, गणित, समाज शास्त्र, इतिहास आदि थे। यह एक अलग ही किस्म का हिन्दी भाषा में परीक्षण था जिसके वांछनीय परिणाम निकले।

विदेशों में भवानी दयाल सन्यासी, भाई परमानन्द, गंगा प्रसाद उपाध्याय, डॉ. चिरंजीव भारद्वाज, मेहता जैमिनी, आचार्य रामदेव, पंडित चमुपति आदि ने हिन्दी भाषा का प्रवासी भारतीयों में प्रचार किया जिससे वे मातृभूमि से दूर होते हुए भी उसकी संस्कृति, उसकी विचारधारा से न केवल जुड़े रहे अपितु अपनी विदेश में जन्मी सन्तति को भी उससे अवगत करवाते रहे।

आर्यसमाज द्वारा न केवल पंजाब में हिन्दी भाषा का प्रचार किया गया अपितु सुदूर दक्षिण भारत में, आसाम, बर्मा आदि तक हिन्दी को पहुंचाया गया। न्यायालय में दुष्कर भाषा के स्थान पर सरल हिन्दी भाषा के प्रयोग के लिए भी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा प्रयास किये गये थे। वीर सावरकर हिन्दी भाषा को स्वामी दयानन्द के देन पर लिखते हैं- "महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश में जिस हिन्दी के दर्शन हमें मिलते हैं, वही हिन्दी हमें स्वीकार है। यह सरल, अनावश्यक विदेशी शब्दों से अलिप्त होकर भी अत्यंत अर्थ वाहक तथा प्रवाही है। महर्षि दयानंद ही सर्वप्रथम नेता थे, जिन्होंने 'हिन्दूस्तान के अखिल हिन्दुओं की राष्ट्र भाषा हिन्दी है। ऐसा उद्घोष व प्रयास किया

था। शहीद भगत सिंह ने पंजाब की भाषा तथा लिपि विषयक समस्या के विषय में अपने विचार भाषण के रूप में प्रस्तुत करते हुए हिन्दी भाषा के समर्थन में कहा था कि- 'बहुत से आदर्शवादी सज्जन समस्त जगत को एक राष्ट्र विश्व राष्ट्र बना हुआ देखना चाहते हैं। यह आदर्श बहुत सुन्दर है। हमको भी इसी आदर्श को सामने रखना चाहिए। उस पर पूर्णतया आज व्यवहार नहीं किया जा सकता, परन्तु हमारा हर एक कदम, हमारा एक कार्य इस संसार की समस्त जातियों, देशों तथा राष्ट्रों को एक सुदृढ़ सूत्र में बांधकर सुख वृद्धि करने के विचार से उठना चाहिए। उससे पहले हमको अपने देश में यही आदर्श कायम करना होगा। समस्त देश में एक भाषा, एक लिपि, एक साहित्य, एक आदर्श और एक राष्ट्र बनाना पड़ेगा, परन्तु समस्त एकताओं से पहले एक भाषा का होना जरूरी है, ताकि हम एक दूसरे को भली भांति समझ सके। एक पंजाबी और एक मद्रासी इक्ट्ठे बैठकर केवल एक दूसरे का मुंह ही न ताका करें, बल्कि एक-दूसरे के विचार तथा भाव जानने का प्रयत्न करें। परन्तु यह पराई भाषा अंग्रेजी में नहीं, बल्कि हिंदूस्तान की अपनी भाषा हिन्दी में होना चाहिए।

महात्मा गाँधी हिन्दी भाषा के कितने बड़े समर्थक थे इसका पता उनके इस कथन से मिलता है जब उन्होंने कहा था कि जगदीश चन्द्र बसु आदि विद्वानों के आविष्कार जनता की भाषा में प्रकट किये जाते तो जिस प्रकार तुलसी रामायण जनता की भाषा में लिखी होने के कारण अपनी चीज बनी हुई हैं, उसी प्रकार से विज्ञान कीं चर्चायें, विज्ञान के आविष्कार जनता के जीवन को प्रभावित करते।

स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज की हिंदी भाषा को देन निश्चित रूप से अविस्मरणीय एवं अनुकरणीय है। जिस प्रकार तुलसी रामायण जनता की भाषा में लिखी होने के कारण अपनी चीज बनी हुई हैं, उसी प्रकार से विज्ञान की चर्चायें, विज्ञान के आविष्कार जनता के जीवन को प्रभावित करते।

स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज की हिन्दी भाषा को देन निश्चित रूप से अविस्मरणीय एवं अनुकरणीय है।

मिनिस्टर ऑफ रिलिजन (धर्म)
आर्यसमाज लन्दन

"व्यथा"

क्यूँ री माँ,
वह क्रूर - निर्दयी - राक्षस
व्यक्ति मेरा बाप है।
या मेरा जन्म होना स्वयं अभिशाप है।।
ममता की मूरत की आंखों में
किस निर्लज समन्दर का पानी है
मेरी कुर्बानी, तेरी जुबानी
आंसुओं में डूबी, तेरी मेरी कहानी है।।
तंगादिल क्यूँ हो रही नारी
दो कुल की सूत्रधार
क्यूं... कहलाती बेचारी।।
माँ-पुत्र मोह को मत कर अभिमान।
बिन बेटी के, किस कुल का चढ़ा परवान।।
कन्या भ्रूण के हत्यारों
मां कातिल है या बाप खूनी है।
राखी के दिन पूछ जाकर उससे
आज किस भाई की कलाई सूनी है।

रचयिता - विजयलता सिन्हा,
केलाबाड़ी, दुर्ग (छ.ग.)

सामयिक

कितना बदल गया इन्सान

– डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

सन् १९४७ में भारत देश स्वतंत्र हुआ था अंग्रेज भारत छोड़कर चले गये, हमारे देश के निवासी यहां के कर्णधार बने हमने इतने में ही समझ लिया कि यही आजादी है, परन्तु यह तो केवल विदेशियों को भारत भूमि से भगाना था स्वतंत्रता नहीं पूर्ण स्वतंत्रता तो तब होगी जब हमारी संस्कृति जो वैदिक संस्कृति थी वह समुचित रूप से स्थापित होगी। आज भारत की स्थिति वैसी नहीं जैसी हमारे पूर्वज चाहते थे।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल, ठा. रोशनसिंह, लाहिड़ी भगत सिंह जैसे अनेकों क्रान्तिकारियों ने अपना जीवन इस देश की सुख शांति हेतु लगा दिया और प्राण भी अर्पित कर दिये वह चाहते थे कि हमारा देश स्वतंत्र हो और यहां सब कुछ स्वदेशी हो विदेशी कुछ भी न हो इसीलिए क्रांतिकारियों ने विदेशी सामान व वस्त्रों आदि की होली जलानी आरम्भ कर दी थी, आज हम उनके विचारों से लगता है दूर जा रहे हैं। स्वदेशी के नामपर आज दिखावा व ढोंग तो होते हैं रात्यत: वह स्वदेशी विचार अभी दूर है।

आज कितने व्यक्ति हैं जो खादी का प्रयोग करते हैं, प्रथम प्रधानमंत्री के समय संसद धोती कुर्ता व टोपी वालों से भरी होती थी। आज टाई बेल्ट वाले अधिक हो गये हैं। आज नगर व महानगर के कार्यालयों में सरकारी या गैर सरकारी में धोती कुर्ता वाला कोई बिरला ही मिलेगा। विद्यालयों में मुंशी प्रेमचन्द की भांति पहले अधिकतर धोती कुर्ता पहने हुए ही अध्यापक पढ़ाते थे। यहां तक कि विद्यार्थी भी धोती कुर्ता पहनते थे। आज अध्यापक व विद्यार्थी टाई बेल्ट वाले हो गये हैं। लगता है अब हम ही अंग्रेज बन गये हैं। ग्रामों में बड़ों का सम्मान था। नगर व महानगरों में भी सभी एक दूसरे आदमी से परस्पर अभिवादन करते थे। आज वह प्रथा भी अंग्रेजी में बदल गयी है। विद्यालयों में विद्यार्थी हाय-हाय बाय-बाय करते हैं। ब्वाय तथा गर्ल फ्रैण्ड बनाने का विदेशी चलन बढ़ गया है। पहले प्रत्येक विद्यार्थी लड़कियों को बहन कह कर ही सम्बोधित करता था। लड़कियाँ लड़कों को भाई कर सम्बोधित करती थीं, स्थिति और अधिक विकृत होती जा रही है छात्रावासों की सफाई के समय पता चलता है यहां तक छात्र-छात्राएँ होटल रेस्टोरेन्ट व बार में मद्यपान करते थिरकते देखे जा सकते हैं। यह सब भारतीयता के विरूद्ध है।

स्वतंत्रता के पश्चात् संस्कृत को राजकीय भाषा बनाना चाहिये था। जैसा कि आज कान्वेंट इंग्लिश माध्यम के विद्यालय खोलने की स्पर्धा हो रही है, परन्तु उनमें संस्कार नाम की कोई बात नहीं, चरण स्पर्श करने में तो उन छात्रों को लज्जा आती है, नमस्ते वह करते नहीं बचपन से ही हाय हैलो करना ही बताया जाता है। कान्वेंट स्कूल अंग्रेज और काल अंग्रेज पैदा करने के कारखाने हैं, जो मैकाले चाहता था वही आज हो रहा है।

संस्कृत के विद्यालय ही समाप्त होते जा रहे हैं, संस्कृत का पठन-पाठन समाप्त प्राय: हो गया है क्योंकि आज कुछ अंग्रेज कर्णधार यह समझ रहे हैं कि अंग्रेजी ही विकास की भाषा है उन्नति की भाषा है, जबकि अंग्रेजी देश को पीछे ले जा रही है। आज के काले अंग्रेजों का यह भ्रम है कि अंग्रेजी उन्नति की भाषा है। उन्हें देखना चाहिए कि आज चीन, जापान, फ्रांस, अमेरिका, रूस जैसे विकसित राष्ट्रों में वहां की केवल अपनी और अपनी ही भाषायें है अपनी ही भाषाओं में उनके समस्त राजकीय कार्य होते हैं। (न्याय) सभी विषय वहां की अपनी भाषाओं में ही पढ़ाये जाते हैं। इसीलिए वह देश विकसित है। हमारे यहां उनकी नकल कर लेते हैं।

हमें अपने देश से छूआछूत, ऊँच-नीच, जातिवाद दूर करना था, अभी देश इस क्षेत्र में बहुत पीछे है हम उन हिन्दूओं को भी पुन: हिन्दू नहीं बना सके जो विदेशी लुटेरों ने तलवार से खून बहा कर हमसे अलग कर मुसलमान बना दिये थे। अपितु उनका देश पकिस्तान और बनवा दिया वह बड़ी भूल थी।

आज समाज में अनेक कुरीतियां व अंध -विश्वास चल रहे हैं, जिनमें मूर्तिपूजा व गुरूडम वाद सबसे भयंकर रोग है, झाड़फूंक, भूत-प्रेत व छाया का चक्कर गण्डा ताबीज बंधवाना तांत्रिकों का बढ़ता जाल भारत को सामाजिक रूप से पीछे ले जा रहे हैं। ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज स्थापति किये जहां से भारत की संस्कृति व वेद प्रचार होता रहेगा लोग अपनी संस्कृति को पहचानने व आचरण करते रहेंगे। सत्यार्थ प्रकाश लिखा जिससे सहस्रों का जीवन ही बदल गया उनके अंधेरे जीवन में सत्य का प्रकाश हो गया। अभी अनेक मत मतान्तर बनते जा रहे हैं क्योंकि वह अभी अंधेरे में है यदि सत्यार्थ प्रकाश पढ़ लें तो समझ आएगी कि हम क्या थे और क्या होगा चाहिए।

यदि हम स्वतंत्रता का अर्थ समझते तो कार्यालयों में बैठ देश का धन न खाते, देश के साथ गद्दारी न करते, घोटाले भ्रष्टाचार न करते, काला धन एकत्र न करते, आज अनेक उच्च पदाधिकारयिों के संबंध हत्यारों, बलात्कारियों, अपराधियों से देखने में भी आ जाते हैं। ऐसे भी लोग हैं जो समाज का नेतृत्व कर रहे हैं परन्तु वह व्याभिचारी, अपराधी प्रवृत्ति के हैं। देश को लूट के खाने वाले हैं, केवल अपने लिये ही प्रयत्न करते हैं, जनता की नहीं सुनते ऐसे भ्रष्ट लोगों को ऊंचे-ऊंचे उद्योगपति ही धन देकर समाज के कर्णधार बनवा देते हैं। जहां चुनावों में अथाह ध ान बर्बाद किया जाता है। ग्राम प्रधान के चुनावों में ही देखा जाय तो ग्रामों में मद्य, मांस, वस्त्र धन आदि बहाया जाता है। यहां तक कि वेश्यावृत्ति तक परोसी जाती है। ऐसे लोग शराबी कवाबी इस देश का क्या भला करेंगे। यह सोचने की बात है- क्या हमारे शहीदों ने क्रांतिकारियों ने ऐसा सोचा था कि चुनावों से पहले मतदाताओं को मद्य व मांस की दावतें दी जाया करेंगी। किसी ने कहा था कि भारत का सत्य रूप देखना चाहो तो ग्रामों में जाओ परन्तु आज ग्रामों का रूप भी विकृत हो रहा है न वह चौपाल रहीं न भाईचारा न ही शादी विवाह जैसे संस्कारों की वह रस्में सब कुछ बदल गया। वहां भी अंग्रजी संस्कृति छा रही है। आज विवाह आदि उत्सवों पर आधुनिक कला का समावेश होता जा रहा है। पहले बैठकर पत्तलों पर भोजन करते थे अब सर्वत्र खड़े होकर प्रचलन हो गया है।

भ्रष्टाचार, बलात्कार, हत्या अपराध चरम सीमा पर है। दहेज हत्याएँ बढ़ रही है। बेटों की बोली लगने लगती है। ऐसे में कैसे कहें की भारत पूर तरह स्वतंत्र है। आज गरीबों को न्याय नहीं मिलता वह भी बिकाऊ हो गया है। अभी पूरी स्वतंत्रता मिलने में देर है। आर्यसमाज जैसी संस्थायें संघर्षरत् है, परन्तु क्या करें अनेक आर्यसमाज भी भ्रष्टाचार के मार्ग पर चल पड़े हैं।

पता : गली नं. २, चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा-२०३१३१

सच्चे गुरू की पहचान

एक शिष्य ने सोचा गुरू के पास जाता हूं, परीक्षा लूं कि सच्चा है या नहीं। गुरू से कहा, कल मैं सब का भोजन बनाऊंगा। सब शिष्यों को बोला खाना नहीं बनाना, मैं लाऊंगा। गुरू तो आत्मा की बात ही करता रहा। दूसरे दिन ये सब टिफिन लाये पर सब खाली थे। गुरू को विक्षेप न आया। दूसरे दिन फिर इसने कहा, मैं खाना लाऊंगा पर खाली टिफिन ही लाया। बस आकर कह दिया रास्ते में भूखे कुते मिले उन्हें दे डाला। गुरू शान्त रहा पर शिष्यों को क्रोध आ गया। तीसरी बार इसने गुरू को घर में बुलाया खाना खिलाने। पर खाना नहीं बनाया। ऊपर से गुरू को insult किया। गुरू की शांति फिर भी भंग नहीं हुई। यह देख शिष्य बहुत रोया कि इतने सच्चे गुरू की इस प्रकार परीक्षा ली।

उपादेयात्मक

सदाचार आपकी सम्पदा

–स्व. चैतन्यमुनि महात्मा

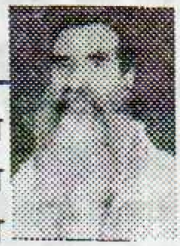

यह एक ध्रुव सत्य है कि दुराचारी कभी भी अपने जीवन में सुखी नहीं हो सकता है। वास्तव में सुख-दुख का आधार आदमी के सद्विचार व ही होते हैं। कुविचारी भले ही स्वयं को कुछ समय के लिए सुखी समझ ले मगर वह वास्तविक व स्थाई सुख से सदा वंचित ही रहता है। वह स्वयं तो सुख, शांति तथा आनन्द से वंचित रहता ही है मगर वह अपने परिवार, समाज और देश के लिए भी अन्ततः किसी न किसी प्रकार से दुःखदायी ही सिद्ध होता है। दुराचारी न स्वयं तृप्त रह सकता है और न ही किसी दूसरे को तृप्त कर सकता है। इसके विपरित सदाचारी संसार में समस्त सुखों को प्राप्त करता है.... वह स्वयं तो सुखी होता ही है मगर वह अपन सम्पर्क में आने वालों को भी सुख और शांति प्रदान करता है। दुराचारी व्यक्ति पर कोई विश्वास नहीं करता है मगर सदाचारी पर सभी विश्वास करते हैं.....वह सबका प्रिय होता है... उसे माँ-बाप और बड़े लोगों तथा आचार्यों का प्रेम व आशीर्वाद प्राप्त होता है। दुराचारी अपने शरीर का तो नाश करता ही है मगर साथ ही वह अपने मन और बुद्धि को भी विकृत कर लेता है। यह विकृत मन और बुद्धि उसे अन्ततः कहीं का नहीं छोड़ती है तथा वह व्यक्ति सर्वनाथ को प्राप्त हो जाता है।

सदाचार वास्तव में है क्या ? **सतामाचारः सदाचारः** अर्थात् सत्पुरूषों, श्रेष्ठ जनों के शास्त्र समस्त आचार एवं सद्विचारों का नाम ही सदाचार है। **सदाचार का परिभाषित अर्थ है** – शास्त्रविहित शुभ कर्मों को निरन्तर करना। इस प्रकार हम देखें तो सदाचार में अनेक बातों का समावेश होता है, जैसे उत्तम ग्रन्थों का स्वाध्याय करना, सदा उच्च विचार रखना, उत्तम व्यवहार करना, अपने चरित्र को ऊँचा उठाना, शिष्टाचारी होना, सत्य और धर्म का ही अनुपालन करना तथा परमात्मा पर अटूट श्रद्धा, समर्पण और विश्वास का होना आदि। इसके साथ-साथ अन्य व्यवहारिक बातों का अनुपालन करना भी सदाचार के ही अन्तर्गत आता है। एक बहुत ही सार्थक, सुन्दर तथा उत्तम उक्ति है, - सादा जीवन उच्च विचार। हम जिस भी महापुरूष का जीवन देखें, उन सब में यह विशेषता रही है। सदाचारी पुरूष अपने बाहरी दिखावे की ओर ध्यान न देता है बल्कि अपने अन्तर की ओर ही उन्मुख रहता है वह बाहर का श्रृंगार करने के स्थान पर अपने आपको भीतर से श्रृंगारित करने के ही कार्य करता है। हमारे नीति ग्रन्थों सदाचार को ही व्यक्ति का सर्वोत्कृष्ट तथा सर्वोत्कृष्ट तथा सर्वोत्तम सौन्दर्य बताया है।

सदाचारी व्यक्ति प्रतिक्षण आत्मनिरीक्षण करता रहता है कि मेरे अन्तःकरण पर कोई किसी प्रकार की भी मलीनता न आ जाए... वह सदा कुसंगति से दूर रहता है कुसंग से वह ठीक इसी प्रकार डरता रहता है जैसे किसी जहरीले सांप से डरा जाता है वह जानता है कि सांप का डसा तो भले ही बच भी जाए मगर कुसंग का डसा हुआ सर्वथा बर्बाद हो जाता है. ..यह जागरूकता ही उसे पग-पग पर बचाती रहती है और वह अपने सदाचार पर किसी प्रकार की भी आंच नहीं आने देता है। साधारण व्यक्ति बार-बार अपना सौन्दर्य देखने के लिए शीशा देखता रहता है मगर वास्तविक सौन्दर्य तो सदाचार ही है... प्रदीप जी ने बहुत ही सुंदर एक गीत लिखा है - मुखड़ा क्या देखे रे दर्पण में, जरा दया धर्म नहीं तेरे मन में... 'दुराचारी व्यक्ति की तो ठीक ऐसी ही स्थिति होती है – उमर भर बस यही गलती करता रहा, धूल चेहरे पर थी और आईना साफ करता रहा.....।'

सदाचारी व्यक्ति का जीवन में चतुर्दिक उत्थान होता है क्योंकि उसे स्वयं अपन चरित्र, सत्य धर्म और परमात्मा पर पूरा-पूरा विश्वास, श्रद्धा और समर्पण होता है। वह स्वयं तो उन्नति करता ही है मगर वह दूसरे की उन्नति से भी दु:खी नहीं होता है। दूसरे की उन्नति को दूखकर जलने वाले का नाश हो जाता है, बल्कि यूं कहें कि - असूया प्रथमं पदं मृत्योः अर्थात् असूया मृत्यु की ओर प्रथम कदम हैं... हमारे ग्रन्थों में बहुत ही सुन्दर-सुन्दर शिक्षाप्रद घटनाएँ तथा प्रसंग आते हैं... महाभारत में एक प्रसंग आता है कि जब महाराज युधिष्ठिर जी ने राजसूय यज्ञ रचाया तो दुर्योधन आदि सभी लोग भी उसमें आमंत्रित किए गए थे। उन्हें विधिवत् व्यवस्था का हिस्सा बनाया गया था। दु:शासन ने भोजन आदि की व्यवस्था को संभाला था और दुर्योधन आए हुए राजा-महाराजाओं को स्वागत करता मगर वहां उसके मन की ईर्ष्या ने और भी अधिक विकराल रूप धारण कर लिया। उसने देखा कि सोना, चांदी, हीरे और जवाहरात आदि भेंट दिए जाते थे... दुर्योधन उन्हें ग्रहण तो करता था मगर वे धर्मराज के कोष में चले जाते थे। उस रात जब दुर्योधन सोने के लिए अपने कक्ष में गया तो उसको नींद नहीं आ रही थी। शकुनि का कक्षा भी पास में ही था। जब शकुनि ने आधी रात को देखा की युवराज के कक्ष में रोशनी जल रही है तो वह दुर्योधन के कक्ष में गया। उसने दुर्योधन ने उत्तर दिया कि मामा जी मुझे नींद नहीं आ रही है। शकुनि ने पूछा कि क्या कोई शारीरिक कष्ट है... तो मैं किसी वैद्य को बुलाने की व्यवस्था करता हूँ। दुर्योध न ने एक गहरा सांस लेते हुए कहा कि मामा जी मुझे नींद न आने का कारण कुछ और है, इसका उपचार कोई वैद्य नहीं कर सकेगा...मुझे युधिष्ठिर के मान-सम्मान और उसे दी गई भेंटों को देखने के बाद बहुत अधिक दु:ख हुआ है, मुझे नहीं न आने का कारण यही है। शकुनि ने उससे कहा कि तुम भी युवराज हो... जिस प्रकार युधिष्ठिर ने अपने गुणों के आधार पर इतना बड़ा सम्मान प्राप्त किया है तुम भी प्राप्त कर सकते हो... तुम भी इसके लिए प्रयास करो. ... मगर दुर्योधन ने शकुनि से कहा कि मामा जी अब तो मैं संसार में जीना ही नहीं चाहता हूँ। मेरी जीने की इच्छा ही समाप्त हो गई। या तो मैं किसी सरोवर में डूबकर अपने प्राण त्याग दूंगा या अग्नि में जन जाऊंगा...युधिष्ठिर का वैभव देखने के बाद मैं जीवित नहीं रह सकता हूं...या तो इसका काई उपाय खोजो कि वह सब धन हमें मिल जाए अन्यथा मैं अपने प्राण त्याग दूंगा... फिर शकुनि ने पांडवों के धन आदि को प्राप्त करने के लिए उनसे छल करने का षड्यंत्र किया था... युद्ध हुआ और दुर्योधन अपने समस्त बन्धु-बान्धवों के साथ मृत्यु का ग्रास बना।

दुराचारी सदा ही दूसरे के सुख से दु:खी होता रहता... वह इसलिए दु:खी कम होता है कि उसके पास किसी वस्तु का अभाव है मगर दूसरे को वह वस्तु प्राप्त क्यों है, वह इस बात से अधिक दु:खी होता है। क्योंकि उसके मन में दूसरों के प्रति राग और प्रेम नहीं होता। यदि हो तो वह स्वयं भी सुखी रहे और दूसरों के सुख में भी सुख अनुभव करे। कहते हैं कि भक्त मीरा कहीं अपना भजन गा रही थी, उन्होंने बहुत ही मगन होगर भावों से डूबकर, आंखे बन्द करके अपना भजन गाया और जब उन्होंने आंखे खोली तो सामने एक वाक्य लिखा हुआ था - राग के में गाओ। मीरा जी चुपके से उठी और राग के आगे अनु लिखकर उस वाक्य को बना दिया - अनुराग में गाओ। आज के समाज में सबसे बड़ी समस्या यही है कि एक-दूसरे का विश्वास, प्रेम और संवेदना कम होती जा रही है। सदाचार के द्वारा ही इस कमी को पूरा किया जा सकता है, अन्य कोई उपाय नहीं हो सकता है।

दो पल की जिन्दगी है,
इसे जीने के बस दो उसूल बना लो,
रहो तो फूलों की तरह और
बिखरो तो खुशबू की तरह।।

पता : महादेव, सुन्दरनगर, जिला-मण्डी (हि.प्र.) १७५०१८

वैचारिक जोशीमठ त्रासदी हमारे लिए खतरे की घंटी है

चेतन भगत

कहीं दूसरे कस्बों की भी ये हालत न हो

जोशीमठ दरक रहा है और वहां बसे लोगों को सुरक्षित दूसरी जगहों पर ले जाकर बसाने की नौबत आ गई है। बेतहाशा निर्माण, पर्यावरण के प्रति चिंता का घोर अभाव और पहाड़ों पर सैर के लिए नॉन-स्टॉप आने वाले लोगों के चलते यह हालत हुई है। बहुत सम्भव है दूसरे कस्बों की भी यही हालत हो जाए। जिन जगहों को हम पवित्र समझते हैं, उनका विनाश कैसे कर सकते है ?

लेखक होने के नाते मुझसे अकसर कहा जाता है कि पहाड़ों पर जाइए और लिखिए। लेखकों के बारे में यह एक रूमानी धारणा बनी हुई है कि वे सुंदर हिल स्टेशनों पर जाकर आरामदेह कॉटेज में रहते है और लिखते हैं। यह सुनने में अच्छा लगता है, लेकिन सच यह है कि आज भारत में ऐसे कोई हिल स्टेशन नहीं हैं, जिन्हें सुंदर कहा जाए। इसके बजाय आपको मिलेंगे ट्रैफिक जाम से त्रस्त पहाड़ी रास्ते, अनापशनाप तरीके से पार्क की गई गाड़ियों से घिरा टाउन सेंटर, कुरकुरे, चिप्स और बिस्किट के पैकेट से भरे साइडवॉक। यहां टिन की छतों वाली दुकानों पर हर चीज बिकती है- छोले-भटूरे से लेकर बच्चों के खिलौने और पश्मीना शॉल से लेकर हाजमे के चूरन तक। यहां वीडियो गेम आर्केड्स और स्कूकर रूम्स भी मिलेंगे। रोडसाइड स्टॉल्स पर तरह-तरह की मैगी और चाइना में निर्मित सस्ते ब्लूटुथ ईयरफोन बेचने वाले पाए जाते है। होटलों में इस बात की प्रतिस्पर्धा है कि किसका साइनबोर्ड सबसे गंदा है और किसके यहां सबसे बुरी लाइटिंग व्यवस्था है। इनके यहां बल्ब के सॉकेट खुले पड़े रहते है और भारत की सबसे चहेती प्रकाश-व्यवस्था यानी ट्यूबलाइट से रोशनी का इंतजाम किया जाता है। अगर आप कोई दुःखदायी कहानी सुनाना चाहते हैं या इस विषय पर किताब लिखना चाहते हैं कि किसी अच्छी-खासी जगह को बरबाद कैसे किया जाए, तो जरूर आप हिल स्टेशनों की सैर पर जा सकते हैं।

भारत के हिल स्टेशन अब सामान्य पर्यटन के उपयुक्त नहीं रह गए हैं। कुछ उद्यमशील इंस्टाग्राम इंफ्लूएंसर्स इन जगहों पर फोन से अच्छी फ्रेम बनाकर तस्वीरें खींच लेते हैं, जिसमें वे दूर बर्फ से लदे पहाड़ों को हाईलाइट करते हैं लेकिन फर्श पर बिखरे कुरकुरे-चिप्स के पैकेट्स को छूपा लेते हैं। वे इन तस्वीरों को इंस्टाग्राम पर उन पंक्तियों के साथ लगाते है, जो सुनने में अच्छी लगती है, पर जिनका कोई मतलब नहीं होता - जैसे कि 'माई सोल बिलॉन्ग्स टु द हिल्स' या 'वांडरलस्ट इज माय स्पिरिट एनिमल।' ये तस्वीरें आपके फीड में पॉप-अप होती है तो आप उत्साहित हो जाते हैं, परिवार सहित वहां छुट्टियां बिताने चले जाते है, इस उम्मीद में कि आपकी आत्मा को पोषण मिलेगा। जबकि आपका सामना ट्रैफिक जाम और कूड़े-करकट से भरे एक कस्बे से होता है। इसलिए मैं तो कहूंगा कि अगर आप पहाड़ों और प्रकृति पर कृपा करना चाहते हैं तो

हमें आने वाले दशकों में पर्यटकों को बढ़ते दबाव के मद्देनजर अगर पचास नहीं तो कम से कम बीस नए हिल टाउंस की दरकार है।

प्रसिद्ध हिल स्टेशनों पर यात्रा करने न जाएं। वहां आपको राहत नहीं मिलने वाली।

इन पहाड़ी कस्बों को हमने जो नुकसान पहुंचाया है, वह अब खतरनाक स्तर पर पहुंच गया है। बात केवल आंखों को खूबसूरत लगने वाली जगहों की बरबादी तक ही सीमित नहीं रह गई है। ये कस्बे अब धीरे-धीरेमरने लगे हैं। उत्तराखंड का जोशीमठ दरक रहा है और वहां बसे लोगों को सुरक्षित दूसरी लगहों पर ले जाकर बसने की नौबत आ गई। बेतहाशा निर्माण, पर्यावरण के प्रति चिंता का घोर अभाव और पहाड़ों पर सैर के लिए नॉन-स्टॉप आने वाले लोगों के चलते यह हालत हो गई है। बहुत संभव है कि जल्द ही दूसरे कस्बों की भी यही हालत हो जाए। ये पहाड़ी कस्बे हमारा गौरव हैं और पारिस्थितिकी संतुलन के लिए जरूरी हैं, हमें उन्हें नष्ट करने से खुद को रोकना होगा। जिन जगहों को हम पवित्र समझते हैं, उनका ऐसा विनाश कैसे कर सकते हैं?

ये बात सच है कि टूरिज्म इन कस्बों की इकोनॉमी के लिए जरूरी हैं होटलें, दुकानें, टैवल एजेंसियां, कारें-इन सबसे पैसा आता है। लेकिन किस कीमत पर ? क्या हम जंगलों के सभी पेड़ काटने की इजाजत दे सकते हैं? या बाघों का शिकार करने की? अगर इन चीजों पर रोक है तो पूरे के पूरे कस्बो और पर्वत-श्रृखलाओं को नष्ट करने की अनुमति कैसे दी जा सकती है? ठीक है कि भारतीयों की छुट्टियां बिताने के लिए पर्यटनस्थलों की दरकार है, खासतौर पर गर्मियों के मौसम में। बढ़ती प्रतिव्यक्ति आय के चलते अब ज्यादा से ज्यादा लोग हिल स्टेशनों की यात्रा करने में सक्षम हो गए हैं। लेकिन इन हिल टाउंस की यह क्षमता नहीं है कि इतनी बड़ी संख्या में पर्यटकों को समायोजित कर सकें। इनमें से अधिकतर का निर्माण ब्रिटिश राज में किया गया था, कुछ का तो कुछ ही सौ साल पहले। वे हरगिज इस बात के लिए डिजाइन नहीं किए गए थे कि लाखों पर्यटक कारें लेकर वहां आ धमकें। हमें और हिल स्टेशन विकसित करने चाहिए। अगर ब्रिटिश लोग आज से एक सदी पहले वह सब कर सकते थे तो हम आज बेहतर तकनीक के साथ वैसा क्यों नहीं कर सकते? हमें आने वाले दशकों में पर्यटकों को बढ़ते दबाव के मद्देनजर अगर पचास नहीं तो कम से कम बीस नए हिल टाउंस की दरकार है, जहां बेहतरीन इंफास्ट्रक्चर हो।

हालांकि इन तमाम कस्बों पर मर्यादाएं निर्धारित करना होंगी-सीमित संख्या में निर्माण हो, निश्चित मात्रा में भूमि खाली छोड़ी जाए, पर्यटकों की संख्या तय हो आदि। कूड़ा-प्रबंधन के बारे में पहले ही सोचना होगा। अगर भूटान जैसा देश इतने कम संसाधनों के बावजूद यह कर सकता है तो हम क्यों नहीं? भूटान में विदेशियों से प्रवेश -शुल्क लिया जाता है। शायद हमें भी अब हिल टाउंस में आने वाले पर्यटकों से शुल्क लेने के बारे में सोचना होगा। साथ ही वहां प्लास्टिक बैग्स और पैकेट्स के इस्तेमाल पर भी पूर्णतया रोक लगानी होगी। जोशीमठ में हो रही घटनाएं हम सबके खतरे की घंटी होनी चाहिए। महज चंद रूपए कमाने के लिए प्रकृति का विनाश कर देना तो बड़ा ही महंगा सौदा होगा।

(ये लेखक के अपने विचार हैं।)

क्रांति के दूत : गणेश शंकर विद्यार्थी

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

गणेश शंकर विद्यार्थी का जन्म इलाहाबाद (प्रयागराज), उत्तर प्रदेश में २६ अक्टूबर १८९० ई. में हुआ था। गणेश शंकर विद्यार्थी एक सच्चे पत्रकार थे, वे निडर व निष्पक्ष होकर कलम चलाते थे। गणेश जी पत्रकार होने के साथ-साथ समाजसेवी, स्वतंत्रता सेनानी, कुशल राजनीतिज्ञ भी थे। भारत के स्वाधीनता संग्राम में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। अफसोस, सरकार ने व भारत की जनता ने उन्हें वह सम्मान नहीं दिया जिसके वे हकदार थे। अपनी बेबाकी व निडर अंदाज से वे बड़े-बड़े तुर्रमखांओं के मुंह पर ताला लगा देते थे। गणेश जी ने अपनी कलम की ताकत से अंग्रेज शासन की नींव हिला दी थी। गणेश जी ने महात्मा गांधी व गरम खून वाले क्रांतिकारियों को समान रूप से देखा और उन्हें सहयोग किया।

गणेश शंकर विद्यार्थी जी के पिताजी का नाम श्री जय नारायण था व इनकी माता जी का नाम गोमती देवी था। उनके पिता जय नारायण एक अध्यापक थे। और वे उर्दू व फारसी के विद्वान थे। गणेश शंकर विद्यार्थी भी अपने पिता की तरह ही उर्दू व फारसी के बेहतरीन विद्वान थे, परंतु आर्थिक तंगी के कारण वे इंटर तक की शिक्षा ग्रहण कर पाये, किंतु उनका स्वतंत्र अध्ययन अनवरत चलता ही रहा। अपनी मेहनत व लगन से उन्होंने पत्रकारिता के गुणों का सीखा। गणेश जी को एक सरकारी नौकरी भी मिली थी परंतु अंग्रेजों से उनकी पटी नहीं और नौकरी छोड़ दी। इसके बाद गणेश जी ने कानपुर में करेंसी ऑफिस में नौकरी कर ली, लेकिन यहां भी अंग्रेजों में नहीं पटी। अत: नौकरी छोड़ दी और अध्यापक हो गये।

महावीर प्रसाद द्विवेदी गणेश जी की योग्यता से खूब परिचित थे। इसीलिए उन्हें सरस्वती के संपादन सहयोग के लिए बुला लिया। यहीं से पत्रकारिता का अध्याय शुरू होता है। एक वर्ष बाद गणेश जी अभ्युदय नामक पत्र में चले गये। वर्ष १९०७ ई. से १९१२ ई. तक गणेश जी का जीवन अत्यंत कष्टप्रद रहा। इन्होंने कुछ समय तक प्रभा का संपादन भी किया। वर्ष १९१३ ई. अक्टूबर माह में प्रताप (साप्ताहिक) का संपादक पद ग्रहण किया। प्रताप के माध्यम से गणेश जी ने किसानों की आवाज बुलंद की। गणेश जी पहले उर्दू में लिखते थे, बाद में मुंशी प्रेमचंद की तरह हिंदी में लिखने लगे। गणेश जी आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी को अपना साहित्यिक गुरू मानते थे। उन्हीं की प्रेरणा से आजादी की अलख जगाने वाली रचनाएं लिखीं व अन्य भाषाओं में अनुवादित की। गणेश जी बार-बार जेल जाते रहे। गणेश जी हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। कानपुर में वर्ष १९३१ ई. मे मचे सांप्रदायिक दंगों को शांत कराने के लिए गणेश जी अपने संपादकीय कार्यालय से बाहर दंगा स्थल पर गये और क्रूर दंगाइयों ने उन्हें मार दिया। गणेश जी ने हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए भारत माता के चरणों में अपने प्राणों की आहुति दे दी। उनकी मृत्यु पर महात्मा गांधी जी ने कहा-काश ऐसी मौत मुझे मिली होती।

गणेश शंकर विद्यार्थी गरीबों, किसानों, मजलूमों, मजदूरों के सच्चे हमदर्द थे। सभी धर्म व जाति वालों को वे समान दृष्टि देखते थे और उन्हीं लोगों ने चाकू कुल्हाडियों, तलवारों से उन्हें मार दिया। जब दो दिन बाद उनकी लाश मिली तो उन्हें पहचानना भी मुश्किल हो गया था। क्रूर अंग्रेज गणेश जी के नाम से थरते थे, ऐसे गणेश जी को अपनों ने ही मार डाला। उनके असामयिक निधन से हमारा व हमारे देश का कितना नुकसान हुआ है, हम इसका अंदाजा भी नहीं लगा सकते। नेता लोग राजनीतिक फायदे के लिए दंगा करवाते हैं और मूर्ख आपस में ही कट मरते हैं। लानत है हमारी ऐसी धार्मिक भावनाओं पर..।

मैं गणेश शंकर विद्यार्थी व उनके जैसे तमाम अनगिनत योद्धाओं को कोटि-कोटि नमन करता हूं जो धार्मिक दंगो के शिकार हुए।

ग्राम रिहावली, डाक घर तारौली गुर्जर, फतेहाबाद, आगरा, 28311, उत्तर प्रदेश

चिन्तन

बुढ़ापा

वैज्ञानिक बताते हैं कि सात वर्षों में पूरे शरीर के प्रत्येक अणु बदल जाते हैं। इसका अर्थ हुआ की सात वर्ष बाद तुम्हारे शरीर में एक टुकड़ा भी वैसा नहीं होता, वही जो सात वर्ष पहले था। इस प्रकार, सत्तर वर्ष जो आदमी जीता है, उसका पूरा शरीर दस बार बदल जाता है। पूरा का पूरा बदल जाता है और अपने मरे हुए हिस्सों को बाहर फेंकता रहता है। शरीर अपने मुर्दा अणुओं को बालों के रूप में, नाखूनों के रूप में, पसीने के रूप में, मल के रूप में बाहर फेंक रहा है। इसलिए तो बाल को काटते वक्त या नाखून को काटते वक्त दर्द नहीं होता। शरीर तो रोज मरता है, लेकिन हमारे भीतर कोई है जो रोज नहीं मरता। हमारे भीतर कोई जिसकी स्मृति स्थायी है। लेकिन उसे जाना-पहचाना जा सकता है, शांत क्षणों में भीतर जाकर उसे देखा जा सकता है। और जब यह दिखायी पड़ेगा, तो तुम्हें ज्ञात होगा कि मेरी आत्मा तो शरीर से अलग है। और एक दिन तुम्हे यह भी ज्ञात होगा कि मेरा शरीर तो मरेगा, लेकिन आत्मा नहीं मरेगी। बचपन, जवानी, बुढ़ापे की अवस्था में बहुत फर्क आ जाता है हमारे शरीर में लेकिन भीतर कोई है, जो वहीं का वहीं बना रहता है, ज्यों का त्यों, तुमने शायद कभी यह फिक्र न की हो कि आंखें बंद करके तुम यह सोचो कि मेरे आत्मा की कितनी उम्र है? अगर तुम आंखे बंद करके सोचो कि मेरी आत्मा की कितनी उम्र है? अगर तुम आंखे बंद करके सोचोगे, तो भी तुम्हें वहां आत्मा की कोई उम्र पता नहीं चलेगी। दस साल, बीस साल, तीस साल के बाद भी एक सा ही लगेगा, और मरते वक्त भी वैसा ही लगेगा। भीतर कोई उम्र नहीं है, सब उम्र शरीर की होती है। मनुष्य सोचना शुरू करता है कि कभी मैं बचपन से नहीं निकला, अब मैं जवानी से निकल रहा हूं। सच तो यह है कि हमारे भीतर तो कोई एक यात्री है, जो वहीं का वहीं है। स्टेशन बदल जाते हैं - बचपन से जवानी आ जाती है, जवानी से बुढ़ापा आ जाता है। शरीर तो रोज मरता रहता है।

महापुरुष वचनामृत

वातायन

जीवन अज्ञात की यात्रा

जो नया है, वह अपरिचित है। उसके प्रति हम आशंकाओं से भरे और कभी-कभी भयभीत भी रहते हैं। नवलता में आकर्षण भी होता है; किन्तु उसमें छिपा "अज्ञात" हमें सशंकित और भयभीत भी करता है। हम परमात्मा के प्रति इसी कारण से आकर्षित भी होते हैं और भयभीत भी रहते हैं।

सच्चाई यही है कि हमारा जीवन अनेक आकस्मिकताओं से भरा अनजाने "अज्ञात" में ही यात्रा है। रोज़ पुराना छूट जाता है और नये में प्रवेश करना होता है।प्रकृति में सर्वत्र यही तो हो रहा है : सूरज नये सिरे से उदित होता है, नये सिरे से हवाएँ चलती हैं, नये सिरे से पक्षी गीत गाते हैं, नये-नये फूल खिलते हैं...! हमें भी रोज़ जीवन की नयी रोशनी, नया हवा, नये गीत, नये फूल चाहिए !!

पर हम अतीत के साथ उलझे रहते हैं; हमें लगता है कि हम वहाँ सुरक्षित हैं; यह तो धीरे-धीरे एक स्थान पर सड़ते जाने जैसा है। यह ठीक नहीं है । समय की यह धारा लौट कर नहीं आती हैं आने वाले नये पलों को पकड़े, नये पलों को जिएँ ; पुराने को मर जाने दे:

राकेश अशेष

जीवनदर्शन

नास्तिक

ओमप्रकाश बजाज

बहुत से लोग अपने आप को नास्तिक कहते हैं, वे कहते हैं कि वे ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते, कई तो ऐसा कहने में एक प्रकार का गर्व भी अनुभव करते प्रतीत होते हैं और कुछ तो मौका बे मौका किसी न किसी भांति यह बताने का अवसर भी निकाल ही लेते हैं, ऐसा लगता है जैसे अपने आपको नास्तिक बताना अब एक फैशन सा होता जा रहा है, विशेषकर उन लोगों में जो स्वयं को बुद्धिजीवी वर्ग से सम्बद्ध श्रेणी में रखना पसंद करते हैं। अनपढ़ अथवा कम पढ़े लिखे आम लोग तो साधारणतया धर्मभीरू होते हैं, वे तो नास्तिकता की बात सोच भी नहीं सकते। ऐसी बात मन में लाना भी उनके लिए घोर पाप होता है। महिलाओं को तो धार्मिक आस्था घुट्टी में ही पिलाई जाती है। बचपन से ही वह अपनी मां दादी चाची ताई पड़ोसिनों को पूजा अर्चना व्रत उपवास करते देखती हैं और उसी रीति नीति को हृदयंगम कर लेती है, फिर जीवन भर उसे निभाने में लगी रहती हैं।

कुण्ठा, नैराश्य, हार, पराजय, क्षोभ, कष्ट के ज्वार में ईश्वर के अस्तित्व को चुनौती दे बैठना, नकारना, उस पर प्रश्न चिन्ह लगा देना अलग बात है, ऐसे अवसर पर हम में से प्रत्येक के जीवन में कभी कभार आ ही जाते हैं, किन्तु ऐसा व्यक्ति नैराश्य की चरम सीमा में क्षणिक अथवा सामयिक आवेश के आवेग में वशीभूत ही होता है जो शीघ्र ही धुल पुंछ भी जाती है, आस्था निष्ठा पूरी तरह स्थापित हो जाती है। यह भी एक विचित्र संयोग है कि अपने आप को नास्तिक घोषित करने वालों की पत्नियाँ अकसर ईश्वर और उसकी सत्ता में पूरा-पूरा विश्वास और आस्था रखन वाली होती हैं, बल्कि कुछ अधिक भी श्रद्धालु और आस्थावान होती हैं।

अक्सर मन में यह प्रश्न सिर उठाता रहता है कि जैसे हम साधारण लोग किसी कठिनाई परेशानी में पड़ने पर ईश्वर को पुकारते हैं, उसकी कृपा अनुकम्पा दयादृष्टि का आव्हान करत हैं, उसे अपना कष्ट क्लेश दुविधा बताकर अपना जी हल्का कर लेते हैं। वैसी परिस्थितियों में हमारे से तथाकथित नास्तिक भाई क्या करत होंगे। किसे पुकारते होंगे। किससे सहायता की गुहार लगाते होंगे, यह प्रश्न कई बार पूछा भी है मगर कभी, कहीं से भी, कोई संतोषजनक युक्तियुक्त उत्तर नहीं मिला। बस, अक्सर ही ऐसे लोग या तो बात घुमा ले गए अथवा आंय-बांय-शांय कर के रह गए, कभी कभी लगता है कि शायद ऐसे कुछ लोग नास्तिकता को भी फैशन के रूप में, कुछ अलग दिखाने की भावना से, प्रदर्शित करने का प्रयास मात्र करते हैं।

ईश्वर का अस्तित्व तो हर धर्म ने स्वीकारा है, हमारी आस्था हमें हर कदम पर एक संबल प्रदान करती है। जैसे हम परिवार के एक सहृदय बड़े बुजुर्ग के पास जाकर एक अपनी भड़ास निकाल कर मन हल्का कर लेते हैं और ढाढस पा लेते हैं, कुछ वैसा ही हम ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास कर के प्राप्त करते हैं। इसके अतिरिक्त हमारी मान्यता में कोई ऐसी शक्ति तो है जिससे हम अपने कष्टों के निवारण, परेशानियों से निजात, तकलीफों से छुटकारे के साथ-साथ अभिलाषाओं आकांक्षाओं की पूर्ति की आशा तो कर सकें, यदि उसे भी हम नकार बैठेंगे अपनी प्रबुद्धता के दर्प में, तो फिर कहाँ जाएंगे ? क्या करेंगे?

पता–बी–2, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर (म.प्र.)

बढ़ो आर्यों ! पुनः तुम्हें शिवरात्री जगाने आई है।

बढ़ो ! आर्यों ! पुनः तुम्हें ! शिवरात्री जगाने आई है।
तुम्हें यह कर्त्तव्यों का फिर भान कराने आई है।।

ऋषिवर के वे स्वप्न यहां पर धू-धू करके जलतें है,
ऋषि के सैनिक आज परस्पर स्वार्थवाद से लड़ते हैं,
विस्मृत कर हम दायित्वों को, कर्मों से ही डरते हैं,
दूसरों के ही ऊपर हमसब आग उगलते फिरते है,
पढ के झगड़े देख हमारे शर्म स्वयं शरमाई है।
बढ़ों ! आर्यों ! पुनः तुम्हें ! शिवरात्री जगाने आई है।।

पढ़ को ठोकर मार सपूतों। कर्त्तव्यों पर डट जाओ,
पढ़ का लालच छोड़ सपूतों। आज पढ़ों से हट जाओ,
दयानन्द के वीर सैनिकों, धर्म हितों में मिट जाओ,
आर्य सपूतों वैदिक पथ पर, कर तुम कार्य अमिट जाओ,
देखो ! कलिका ऋषि के मन की यह कैसे मुरझाई है।
बढ़ो ! आर्यों ! पुनः तुम्हें ! शिवरात्री जगाने आई है।।

भूल गए तुम दयानन्द के क्या त्यागों को बलिदानों को,
भूल गए हो ऋषिवर के उर के ही क्यों अरमानों को,
भूल गए हो लेखराम, श्रद्धानन्द वीर महानों को,
भूल गए हो युग पुरूषों के दानों की प्रतिदानों को,
आर्य समाजों के झगड़ों को दूर करने आई है।।

बढ़ो ! आर्यों ! पुनः तुम्हें ! शिवरात्री जगाने आई है।।

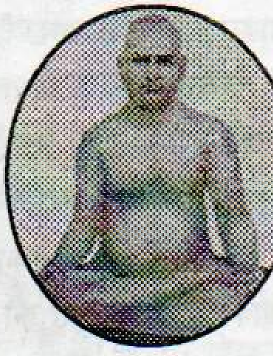

पूरे महिमंडल के हित में आर्य समाज बचाना है,
वेदों का पथ जगतीतल को, हमको ही दिखलाना है,
दनुज वृत्तियां भूमंडल की, हमको सहज मिटाना है,
ऋषि दयानन्द के सपनों को अब साकार कराना है,
इसलिए उठ पड़ो आर्यों ! घड़ी नई यह आई है।
बढ़ो ! आर्यों ! पुनः तुम्हें ! शिवरात्री जगाने आई है।।

स्व. श्री राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति, मुसाफिर खाना सुल्तानपुर (उ.प्र.)

प्रेरणात्मक

स्वामी दिव्यानन्द

जीवनदानी वैदिक मिशनरी

तरूण शास्त्री,

'नीतिवान निन्दा करें या स्तुति, धन प्राप्ति हो या नहीं, आज मृत्यु हो या युगों बाद इन बातों की चिन्ता किए बिना धीर पुरूष न्याय के मार्ग से कभी विचलित नहीं हुआ करते। अर्थात् धैर्यशील धीर पुरूष न्याय के मार्ग अवलम्बन करके उससे किसी भी नहीं हटा करते।' मैं सदर प्रमाण करता हूँ उस वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द के अनन्य शिष्य दिव्य गुणों से सुभूषित पूज्य स्व. स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी को, जिनकी दिव्य दृष्टि ने छत्तीसगढ़ क सुदूर वनवासी अंचल सरगुजा (अम्बिकापुर) दण्डकारण्य (बस्तर) जैसे पिछड़े क्षेत्रों में व्याप्त अशिक्षा, गरीबी, भूखमरी से पीड़ित वनवासियों की दयनीय दशा को देखा गरीबी, और भूखमरी के कारण गाँव के लोग किस प्रकार अपने धर्म को छोड़कर विदेशी ईसाई मिशनरियों के अनुयायी बनते जा रहे हैं इस पूरे घटनाचक्र को निकट से देखा और महसूस किया। विदेशी मिशनरियों की जड़े वनवासियों के चूल्हे चौके तक पहुंच चुकी थी। उनकी सेवा, सहयोग व चिकित्सा से वनवासी प्रभावित थे, लेकिन सेवा की आड़ में ध र्मान्तरण के प्रखर विरोधी थे। राष्ट्र भक्त स्वामी दिव्यानन्द जी ने वैदिक संस्कृति भारतीय सभ्यता राष्ट्रभक्ति की महत्ता का प्रचार करके विदेशियों की चाल से कुछ समझदार वनवासियों को अपना बना लिया। स्वामी जी उन्हीं में घुल-मिल गये। एक संस्मरण बहुधा सुनाया करते थे कि एक बार बिहार से लगे रामनुजगंज क्षेत्र में एक रात्रि अचानक एक वनवासी शिक्षक के घर पर ठहरना पड़ा। उस शिक्षक के दो छोटे बच्चे थे रात्रि चर्चा में मालूम पड़ा कि वे ईसाई है। भोजन में बासी परोसी गई। जिस बर्तन में स्वामी खा रहे थे उसी में उक्त शिक्षक के बच्चे भी साथ खाने लगे। यहाँ हिन्दू दरवेश की परीक्षा थी परिणामतः पूर्ववत् निर्विकल्प भाव से बासी खाते रहे प्रातः जब विदा होने लगे तो वह वनवासी शिक्षक भाव विभोर हो चरणों में गिर पड़ा। कहने लगा हिन्दूओं में भी उदार सहृदय साधु हैं ये मुझे मालूम न था। आज से मैं पुनः अपने पूर्वजों के मान्य हिन्दू वैदिक धर्म को अंगीकार करना चाहता हूँ आप मुझे दीक्षा दें। शुद्धि संस्कार द्वारा उस परिवार को हिन्दू धर्म में दीक्षित किया गया। आगे चलकर वह पट्ट शिष्य हो गया। स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज का छत्तीसगढ़ आगमन भिलाई के गायत्री महायज्ञ के अवसर पर लगभग १९६० ई. में हुआ। लगभग ३५ वर्ष छत्तीसगढ़ के गांव-गांव एवं कस्बों नगरों- खरोरा, रायखेड़ा, बरतोरी, जर्वे, पथरी, गिर्रा, बलौदाबाजार, लवन, कोर्रा, धमतरी, चूलगहन, मरौद, कुरा, ढाबा, लोहरसी, तिल्दा, दल्लीराजहरा, चरोदा, सगनी, कोहका, भिलाई, कोरबा, रायगढ़, मुड़ागांव, राजगांव, पंगसुवां सलखिया, रायपुर, आदि में वैदिक धर्म का डंका ओ३म् ध्वज का परचम लहराया।

स्वामी जी ने केवल छत्तीसगढ़ अपितु पश्चिम उड़ीसा के ग्रामीण अंचलो में भी वैदिक धर्म का धुआंधार प्रचार किया तथा ऋषि के अमर संदेश, आर्यसमाज के सार्वभौमिक सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाया। स्वामी जी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् कुशल वक्ता एवं सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। रूढ़ियों एवं कुसंस्कारों को दूर करने के लिए आर्यजनों का आह्वान किया परिमाण स्वरूप गांव कस्बों, शहरों के हजारों आर्यजन उनके व्यक्तित्व और विद्वता से आकर्षित होकर आर्यसमाज के अनुयायी बनने लगे अनेकों आर्यसमाजों की स्थापना की, निःसन्देह स्वामी जी का पार्थिव शरीर आज हमारे बीच नहीं है तो भी उनके द्वारा प्रदत्त विचारधारा अन्तः सलिल-सरिता की भांति निरन्तर प्रवाहमान है जो यावत चन्द दिवाकरौ छत्तीसगढ़ी जनमानस को प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। स्वामी जी ने मित्रों, आलोचको की परवाह किए बिना स्वामी दयानन्द के संदेश को, आर्यसमाज के संगठन को आर्यों को आगे बढ़ाया। वे निन्दा-स्तुति से कभी न डरते थे उनके सामने संभवतः भर्तृहरि का यह श्लोक रहा होगा- **निन्दन्तु नीति निपुणाः यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।**

डी.ए.वी. मोनेट पब्लिक स्कूल, रायपुर

विश्लेषणात्मक

आपसी फूट

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

आपसी फूट का राजरोग हमारे देश की प्रगति में सबसे बड़ा बाधक और वर्षों तक पहले मुगलों और फिर अंग्रेजों की गुलामी का कारण रहा है। इसके कड़वे यथार्थ से हम सभी भली-भांति परिचित हैं। कैसे आपस की फूट से रावण की सोने की लंका का सत्यानाश हो गया। पृथ्वीराज चौहान से जयचंद का द्वेष भाव और आपसी फूट से भारत वर्षों तक पराधीन रहा। इसके बाद छोटे-छोटे रजवाड़ों में बंटे देश पर फूट डालो राज करो की नीति पर चलकर व्यापार करने आए अंग्रेजों ने शासन किया। सोने की चिड़िया कहलाने वाले इस देश का दोहन करके इसे दोहन करके इसे दोनों हाथों से भरपूर लूटा। जब भी दो भाई आपस में लड़ते हैं तो तीसरा पंच बनकर उसका फायदा उठाता है। बिल्लियों की लड़ाई में बंदर का न्याय।

अथर्ववेद में वेद भागवान आदेश देते हैं **"मिथो विघ्नाना उपयन्त मृत्युम्"** अथर्व. ६-३२-३ अर्थात परस्पर लड़ने वाले मृत्यु को प्राप्त होते हैं। वदे भगवान के निर्देश और इतिहास की सीख के बावजूद हमारे देश जाति को लगा यह आपसी फूट का राजयोग जाने का नाम ही नहीं ले रहा। किसी भी बीमारी का इलाज करने के लिए उसके कारणों को जानना अत्यन्त आवश्यक है। पूरे विश्व को मार्ग दिखाकर नेतृत्व करने की क्षमता रखने वाला हमारा देश जैसे इस आपसी फूट का शिकार होकर स्वयं ही पथ से भटक चुका है और शायद इस तथाकथित विकास की चकाचौंध में सम्मोहित पाश्चात्य अंधानुकरण करता हुआ अपनी दशा और दिशा खोकर अपने लक्ष्य से दूर होता जा रहा है।

इस देश की सर्वश्रेष्ठ पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति का पोषक आर्यसमाज भी अपने श्रेष्ठतम सत्य सिद्धांतों के बावजूद आपसी फूट के राजरोग का शिकार हो चुका है। इसके कारणों पर जब हम विचार करते हैं तो केवल अधिकारियों की पद लोलुप्ता, लोकेष्णा की भावना और येन केन प्रकारेण अपने पद पर चिपके रहने की इच्छा ही इस आपसी फूट का कारण है। लगभग हर आर्य समाज से लेकर प्रत्येक राज्य की सभाओं, युवा संगठनों, राष्ट्रीय व सार्वदेशिक सभाओं की यही स्थिति है। इनकी अधिकतर शक्ति वेद प्रचार, आर्य सिद्धांतों के प्रसार परोपकार के कार्यो में ना लगाकर अपने अपने संगठनों में झगड़ों अदालती मामलों और एक दूसरे की टांक खिंचाई में लग रही है। जितना खर्च, ऊर्जा कोर्ट केसों में हो रहा है उतना यदि ये सभायें वेद प्रचार में लगा दे तो **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** का देव दयानन्द का संकल्प पूरा हो सकता है।

हम सभी यदि स्वयं को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ कहते हैं महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज के सिद्धांतों को मानते हुए दयानन्दी परिवार के सदस्य हैं तो हमारा दायित्व बनत है कि इस संबंधों की गरिमा को बना कर रखें। लेकिन बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा कि अधिकांश आर्यसमाजों में जो जिस पद पर एक चिपक गया बस उसके बाद वाह सारी ऊर्जा येन केन प्रकारेण उस पर बने रहने के लिए तथा अन्य उसकी टांग खींचकर उतारने के लिए लगा देते हैं अब तो यदि किसी आर्य को एक शहर से दूसरे शहर में जाकर रहना पड़ तो नए शहर में उसको कोई स्वीकार करने के लिए भी जल्दी तैयार नहीं होता। आपसी फूट के कारण हम केकड़ा संस्कृति के अनुगामी हो चुके हैं और इतने खुले वातावरण में भी कूप मंडकू बनकर टर्रा रहे हैं। आर्यसमाजों में निरन्तर घटती संख्या का यह मुख्य कारण है और यह समस्या

केवल आर्यसमाजों तक नहीं अपितु पूरी जाति समाज और राष्ट्र की हो चुकी है। लोकतांत्रिक व्यवस्था के नाम पर हम पूरे समाज राष्ट्र को जाति भाषा क्षेत्र के कबीलों में बांटकर लड़वा रहे है और उसी अंग्रेजी नीति फूट डालो राज करो पर चल रहा है।

वेद भगवान आदेश देते हैं **"मा भ्राता भ्रातारं द्विक्षत्।"** अथर्व. ३-३०-३ अर्थात् भाई-भाई से द्वेष ना करें। वेद भगवान के इस आदेश को मानर पहले हम सभी दयानन्दी परिवार के सदस्यों एक दूसरे के प्रति द्वेष भाव को त्याग कर 'संगच्छध्वं' की भावना के साथ कार्य करते हुए परस्पर सहयोग करके अपनी दशा दिशा सुधार कर धर्म के मार्ग पर चलकर स्वयं खुद को परिवार वा राष्ट्र को प्रगति के रथ पर ले चलें। इस आपसी फूट की बीमारी का इलाज करने के लिए हमें उन स्वार्थी पद लोलुप लोगों की पहचान कर रास्ते से हटाना होगा जो अपनी पद लोलुपता और सत्ता प्राप्ति के कारण हमें आपस में लड़वा रहे हैं।

आपसी फूट के इस राजरोग को जड़ से मिटाकर भाई भाई के प्रेम करते हुए विश्व के सर्वश्रेष्ठ संगठन के श्रेष्ठतम सिद्धांतों के पथ पर पूरे विश्व को एक साथ लेकर चलें तभी हम सभी का कल्याण संभव है अन्यथा इस आपसी फूट के कारण हम एक बार फिर गुलाम हो जायेंगे तब अपने वाली पीढ़ियों हमसे यह प्रश्न पूछेगी तो हमारे पास इसका कोई उत्तर नहीं होगा और हम भी जुए में हारे पांडवों की तरह चुपचाप सिर झुकाए अपनी भारत माता के द्रोपदी चरिहरण को देखने के लिए विवश होंगे।

पता–603 जीएच 53 सेक्टर –20, पंचकूला

बलिदान दिवस

अग्रिम पंक्ति के सेनानी और प्रखर राष्ट्रवादी नेता - वीर सावरकर

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के अग्रिम पंक्ति के सेनानी और प्रखर राष्ट्र नेता थे। उन्हें प्राय: वीर सावरकर के नाम से सम्बोधित किया जाता है। हिन्दू राष्ट्र की राजनीतिक विचार- धारा (हिन्दुत्व) को विकसित करने का बहुत श्रेय सावरकर को जाता है। वे न केवल स्वाधीतना संग्राम के एक तेजस्वी सेनानी थे, अपितु महान् क्रांतिकारी, चिन्तक, सिद्धांत लेखक, कवि, ओजस्वी वक्ता तथा दूरदर्शी राजनेता भी थे। वे एक ऐसे इतिहासकार भी हैं जिन्होंने हिन्दू राष्ट्र की विजय के इतिहास को प्रमाणिक ढंग से लिपिबद्ध किया है। उन्होंने १८५७ को प्रथम स्वातंत्र्य समर का सनसनीखोज व खोजपूर्ण इतिहास लिखकर ब्रिटिश शासन को हिला कर रख दिया था। २६ फरवरी १९६६ को बम्बई में भारतीय समयानुसार प्रात: १० बजे उन्होंने पार्थिव शरीर छोड़कर परमधाम को प्रस्थान किया। वीर सावरकर के ऊपर महर्षि दयानन्द आर्य समाज और सत्यार्थ प्रकाश की कितनी गहरी छाप पड़ी हुई थी। छाप क्यों न पड़ें ? इनके गुरू श्री श्यामकृष्ण वर्मा जो महर्षि दयानन्द के पक्के शिष्य थे। उस महावीर को शत शत नमन।

पुण्य स्मृति

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे। आजाद ही रहे हम आजाद ही रहेंगे ।।

– अनिल आर्य

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में देश के कई क्रांतिकारी वीर-सपूतों की याद आज भी हमारी रूह में जोश और देशप्रेम की एक लहर पैदा कर देती है। वह एक समय था जब लोग अपना सब कुछ छोड़कर देश का आजाद करान के लिए बलिदान देने को तैयार रहते थे और एक आज का समय है जब अपने ही देश के नेता अपनी ही जनता को मार कर खाने पर तुले हैं। देशभक्ति की जो मिशाल हमारे देश के क्रांतिकारियों ने पैदा की थी अगर उसे आग की तरह फैलाया जाता तो संभव था आजादी हमें जल्दी मिल जाती। वीरता और पराक्रम की कहान हमारे देश के वीर क्रांतिकारियों ने रखी थी वह आजादी की लड़ाई की विशेष कड़ी थी, जिसके बिना आजादी मिलना नामुमकिन था।

देशप्रेम, वीरता और साहस की एक ऐसी ही मिशाल थे, शहीद क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद 25 साल की उम्र में भारत माता क लिए शहीद होने वाले इस महापुरूष के बारे में जितना कहा जाए उतना कम है, सन् 1931 में चन्द्रशेखर आजाद शहीद हुए थे। उन्हीं की याद में प्रस्तुत है उनके जीवन के एक छोटा सा वृतांत।

चन्द्रशेखर आजाद का जीवन :- पृथ्वी पर चन्द्रशेखर आजाद जैसे योद्धा का अवतरण एक चमत्कारिक सत्य है, जिससे बदरिकाश्रम के समान पवित्र उन्नाव जिल का बदरका गांव संसार में जाना जाता है, कानपुर जिसे हम क्रांति-राजधानी कह सकते हैं, के निकटवर्ती इसी जनपद में पं. सीताराम तिवारी के पुत्र के रूप में जन्मलब्ध चन्द्रशेखर का बाल्यकाल मालवा प्रदेश में व्यतीत हुआ। असहयोग आन्दोलन से जागे देश में दमन-चक्र जारी थी, सत्याग्रहियों के बीच निकल पड़ें, प्रस्तरखंड उठाया, बेंत बरसाने वाले में से एक सिपाही के सिर में दे मारा, पेशा होने पर अपना नाम आजाद, काम आजादी के कारखाने में मजदूरी और निवास जेलखाने में बताया। गुस्साए अंग्रेज मजिस्ट्रेट ने पंद्रह बेतों की सख्त सजा सुनाई। हर सांस में वंदेमातरम का निनाद करते हुए उन्होंने यह परीक्षा भी उत्तीर्ण की।

क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद :- अचूक निशानेबाज आजाद ने अपना पावन शरीर मातृभूमि के शत्रुओं को फिर कभी छूने नहीं दिया। क्रांति की जितनी योजनाएँ बनीं सभी के सूत्रधार आजाद थे। कानपुर में भगतसिंह से भेंट हुई। साथियों के अनुरोध पर आजाद एक रात घर गए और सुषुप्त माँ एवं जगत पिता को प्रणाम कर कर्त्तव्यपथ पर वापस आ गए। सांडर्स का वध-विधान पूरा कर राजगुरू, भगतसिंह और आजाद फरार हो गए। हमारी आजादी के नींव में उन सूरमाओं का इतिहास अमर है, जिन्होंने हमें स्वाभिमानपूर्वक अपने इतिहास और संस्कृति की संरक्षा की अविचल प्रेरणा प्रदान की।

फिर आया वह दिन :- 27 फरवरी 1931 के दिन चन्द्रशेखर आजाद अपने साथी सुखदेव राज के साथ बैठक कर विचार-विमर्श कर रहे थे कि तभी वहां अंग्रेजों ने उन्हें घेर लिया, चन्द्रशेखर आजाद ने सुखदव को तो भगा दिया पर खुद अंग्रेजों का अकेले ही सामना करते रहे, अंत में जब अंग्रेजों की एक गोली उनकी जांघ पर लगी तो अपनी बंदूक में बची एक गोली को उन्होंने खुद ही मार ली और अंग्रेजों के हाथों मरने के बाजाय खुद ही आत्महत्या कर ली, कहते हैं मौत के बाद अंग्रेज अफसर और पुलिसवाले चन्द्रशेखर आजाद की लाश के पास जाने से भी डर रहे थे। चन्द्रशेखर आजाद को वेष बदलने में बहुत माहिर माना जाता था। चन्द्रशेखर आजाद की वीरता की कहानियाँ कई हैं, जो आज भी युवाओं में देशप्रम की लहर पैदा कर देती है, देश को अपने इस सच्चे वीर स्वतंत्रता सेनानी पर हमेशा गर्व रहेगा।

पता : महर्षि दयानन्द सेवाश्रम, टाटीबंध रायपुर

आरोग्यम् होमियोपैथी से पीलिया (जान्डिस) का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होम्योपैथिक चिकित्सक)
मोबा. 7000236213, 9525515336

आज का युग ने विज्ञान और विकास के अनेकों द्वार खोल दिये हैं। प्रत्येक क्षेत्र में नयी-नयी जानकारियों का उदय हुआ है। चिकित्सा क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। रोग के निवारण के लिए अनेकों चिकित्सा पद्धतियों की खोज हो चुकी है, परन्तु होमियोपैथी की अपनी अलग एक पहचान है।

जिमि अमोघ रघुपति का बाना-इसी को रामबाण कहते हैं। चुनी हुई औषधि से रामबाण के समान जटिल से रोग भस्म हो जाते हैं।

पिलिया - पिलिया रोग को पाण्डू या कावला और अंग्रेजी में जान्डिस कहा जाता है। विद्वान चिकित्सकों का मानना है कि यकृत जिसे अंग्रेजी में लीवर कहते हैं। यकृत लीवर के भीतर ही पिताशय का स्थान है उसी पिताशय से निकला हुआ पित किसी शारीरिक गड़बड़ी या कमी के कारण निर्धारित गति से निकल कर रक्त नहीं मिले तो, आँख, मुंह, नाखून और शरीर में पीलापन आ जाता है, इसी शारीरिक स्थिति को पीलिया कहते हैं। इस रोग में रोगी का पूरा शरीर फीका पड़ जाता है, अर्थात् उसकी त्वचा का रंग आँखे आदि सभी पीले हो जाते हैं, साथ ही हल्का ज्वर, सुस्ती, भूख ना लगना, मुंह का कड़वापन, कमजोरी, अनिद्रा आदि लक्षण भी रहते हैं। यह रोग मुख्यत: यकृत (लीवर) की खराबी के कारण होता है, इसके अलावा पौष्टिक तत्वों की कमी, खुली हुई धून न मिल पाना, पुराना मलेरिया आदि कारण हो जाता है।

पित्त पथरी, पित्त के राह में किसी प्रकार का बाहरी या आंतरिक दबाव, पित्त नली में किसी का प्रवेश, पित्त नली का सिकुड़ जाना, डिस्पेप्सिया अर्थात् मन्दाग्नि या अपच या बदहजमी पित्त नली में किसी कारण से सूजन से यह रोग होता है।

पीलिया के लक्षण :- आँख, मुंह, नाखून और पेशाब में पीलापन, भूख कम और मिचलिया, अबकाईयाँ आती रहती है, कुछ मामलों में उल्टी भी हो जाती है। कभी पतले दस्त भी आते हैं कभी पैर भी फूल जाते हैं, और मल में बदबू आती है, नब्ज धीमी गति से चलना, एक मिनट में ३० से ४० बार तक धीमी हो जाती है, रोगी को नींद नहीं आती है, और कमजोरी आ जाती है, रोग पुराना हो जाने पर शरीर में भयानक रूप से खुजली हो जाती है।

होमियोपैथी उपचार :-पीलिया से ग्रस्त कई रोगी उपचार कराकर ठीक हो गये हैं तथा कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

प्रमुख औषधीय :- ब्रायोनिया, चाइना, फेरमफास, चेलिडोनियम, कार्बोवेज, नेट्रूयसल्फ आदि औषधियां लक्षणों के आधार पर होमियोपैथिक चिकित्सक की सलाह से ली जा सकती है।

परहेज :- पथ्य - जो रोगी के लिए सुपाच्य हो वही खाद्य पदार्थ उसे दिया जाना चाहिए। पीलिया के रोगी को पुराना जौ, गेहूं, मूंग, मसूर की दाल, कच्चा केला, परवल, गन्ना आदि दिए जा सकते हैं।

अपथ्य :- मसाले वाली चीजे मांस मटन शराब अचार किसी भी प्रकार का आचार, मैदा, चीना, चाय, काफी आदि पदार्थो का सेवन नहीं करना चाहिए।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबन्ध, रायपुर ४९२००१ (छ.ग.)

आर्य एवं राष्ट्रीय पर्वों की सूची विक्रमी सम्वत् 2079-80 तद्नुसार सन् 2023

क्र.		पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	दिनांक	दिवस
1.		लोहड़ी	माघ कृ. 7, वि. 2079	14-1-2023	रविवार
2.		मकर संक्रान्ति	माघ कृ. 8, वि. 2079	15-1-2023	रविवार
3.		गणतन्त्र दिवस	माघ शु. 5, वि. 2079	26-1-2023	गुरुवार
4.		बसन्त पञ्चमी	माघ शु. 5, वि. 2079	26-1-2023	गुरुवार
5.		सीताष्मी	फाल्गुन कृ. 8, वि. 2079	14-2-2023	मंगलवार
6.	ऋषि पर्व	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन कृ.10, वि. 2079	15-2-2023	बुधवार
7.	ज्योति पर्व	शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव)	फाल्गुन कृ. 8, वि. 2079	18-2-2023	शनिवार
8.	वीर पर्व	पं. लेखराम बलिदान दिवस	फाल्गुन शु. 3, वि. 2079	22-2-2023	बुधवार
9.	मिलन पर्व	नवसस्येष्टि (होली)	फाल्गुन शु. पूर्णिमा, वि. 2080	07-3-2023	मंगलवार
10.		आर्यसमाज स्थापना दिवस चै. शु. प्रतिपदा, नवसम्वतसर	चैत्र शु. प्रतिपदा, वि. 2080	22-3-2023	बुधवार
11.		रामनवमीं	चैत्र शु. 9, वि. 2080	30-3-2023	गुरुवार
12.		वैशाखी	चैत्र शु.13, वि. 2080	14-4-2023	मंगलवार
13.		पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मोत्सव	चैत्र पूर्णिमा, वि. 2080	26-4-2023	गुरुवार
14.		विश्व पर्यावरण दिवस	आषाढ़ कृ. 1 वि. 2080	05-4-2023	सोमवार
15.		विश्व योग दिवस	आषाढ़ शु. 3, वि. 2080	21-6-2023	बुधवार
16.		स्वतन्त्रता दिवस	श्रावण कृ. 14, वि. 2080	15-8-2023	मंगलवार
17.		हरितृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण शु. 3, वि. 2080	19-8-2023	शनिवार
18.	वेद प्रचार	श्रावणी उपाकर्म-रक्षा बंधन	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2080	30-8-2023	बुधवार
	समारोह	हैदराबाद सत्याग्रह दिवस	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2080	30-8-2023	बुधवार
19.		श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद कृ. 8, वि. 2080	07-9-2023	बुधवार
20.		स्वामी विरजानन्द स्मृति दिवस	आश्विन अमावस्या, वि. 2080	14-9-2023	गुरुवार
21.		गांधी/लाल बहादुर शास्त्री जयंती	आश्विन कृ.3, वि. 2080	02-10-2023	सोमवार
22.		विजया दशमी (दशहरा)	आश्विन शु. 10, वि. 2080	24-10-2023	मंगलवार
23.		स्वामी विरजानन्द जन्म दिवस	आश्विन शु. 12, वि. 2080	26-10-2023	गुरुवार
24.	क्षमा पर्व	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक अमावस्या, वि. 2080	12-11-2023	रविवार
25.	बलिदान	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	मार्गशीर्ष शु. 11, वि. 2080	23-12-2023	शनिवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है ।

सफलता का आनन्द उन्हें ही मिलता है जो असफलता के सामने कभी घुटने नहीं टेकते, हिम्मत और हौसले के लिए संघर्ष करते हैं, क्योंकि जीवन में कोई भी हार अन्तिम पराजय नहीं होती, बशर्ते विजय का प्रयास न छोड़ा जाय । सफलता के सदैव दो पक्ष होते हैं । सफलता के लिए पुरुषार्थ करना आवश्यक है, असफलता के लिए नहीं । बुद्धिमान व्यक्ति असम्भव को सम्भव नहीं बनाता लेकिन सम्भावनाओं को उजागर अवश्य करता है । असफलता से सफलता की ओर कदम बढ़ाने के लिए हमेशा प्रयत्न करना करना चाहिए ।

समाचार प्रवाह

महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा विद्यालय टाटीबन्ध में 74वाँ गणतन्त्र दिवस समारोहपूर्वक सम्पन्न

रायपुर । छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में दिनांक 26 जनवरी 2023 को 74वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसके मुख्य अतिथि आचार्य अंशुदेव आर्य, प्रधान-छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के हाथों ध्वजात्तोलन किया गया । कार्यक्रम में श्री भुवनेश कुमार साहू, सभा मंत्री, संत काशीनाथ चतुर्वेदी सभा पदाधिकारी, विद्यालय समिति के सचिव डॉ. विद्याकान्त, श्रीमती ममता सिंह सहित मान्य अतिथिगण मंचासीन रहे । विद्यालय के प्राचार्य श्री विनोद सिंह, उपप्राचार्य श्री पुरुषोत्तम वर्मा, श्रीमती निर्मला बाजपेयी, पं. ऋषि आर्य, पंकज भारद्वाज एवं विद्यालय के समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ सहित छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे तथा विद्यालय के प्रतिभावान एवं वार्षिक खेलकद के विजेता छात्र-छात्राओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किये गए । विद्यालय के बच्चों द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए ।

संवाददाता : प्राचार्य, म.द.आ.उ.मा.वि. रायपुर

तुलाराम आर्य हाई स्कूल लवन में गणतन्त्र दिवस समारोह सम्पन्न

लवन । छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित तुलाराम आर्य हाईस्कूल लवन (बलौदाबाजार) में दिनांक 26 जनवरी 2023 को 74वाँ गणतन्त्र दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसके मुख्य अतिथि श्री पारस ताम्रकार के हाथों ध्वजात्तोलन किये गए ।

कार्यक्रम में श्री मनोज पाण्डेय, श्री अनिल कोसरिया, श्री रामकुमार वर्मा, प्रबंधक-सभा बाड़ा लवन सहित मान्य अतिथिगण मंचासीन रहे । विद्यालय के प्राचार्या एवं विद्यालय के समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ तथा छात्र-छात्राएँ सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे तथा विद्यालय के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया । विद्यालय के बच्चों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत की गई साथ में बसंत पञ्जमी का पर्व भी सम्पन्न किये गए ।

संवाददाता : प्राचार्य, तु.आ.हा.स्कूल लवन

तुलाराम आर्य हा.से.स्कूल कूंरा में 74वाँ गणतन्त्र दिवस सम्पन्न

लवन । छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित तुलाराम आर्य हायर सेकेण्डरी स्कूल कूंरा (धरसींवा) में दिनांक 26 जनवरी 2023 को 74वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, मुख्य अतिथि के हाथों ध्वजात्तोलन किये गए ।

कार्यक्रम में श्री सुधीर दुबे प्रबंधक सभा बाड़ा कूंरा सहित मान्य अतिथिगण मंचासीन रहे । विद्यालय के प्राचार्य एवं विद्यालय के समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ सहित छात्र-छात्राएँ एवं गणमान्य नागरिकगण उपस्थित रहे तथा विद्यालय के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित किये गए ।

विद्यालय के छात्राओं द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए ।

संवाददाता : प्राचार्य, तु.आ.हा.स्कूल कूंरा

सभा कार्यालय दुर्ग में 74वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह सम्पन्न

दुर्ग । छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रशासनिक भवन, दयानन्द परिसर प्रांगण, आर्य नगर, दुर्ग में दिनांक 26 जनवरी 2023 को 74वाँ गणतन्त्र दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, मान्य अतिथि द्वारा ध्वजात्तोलन किया गया । जिसमें सभा कार्यालय के कर्मचारीगण उपस्थित रहे ।

-निज संवाददाता

पंकज ने प्राप्त किया स्वर्ण पदक

दुर्ग । अत्यन्त हर्ष का विषय है कि सांगोपांगवेद विद्यापीठ (आर्ष गुरुकुल) टटेसर-जौन्ती, दिल्ली के अथर्ववेदी छात्र श्रीयुत पंकज भारद्वाज, ग्राम सलखिया, जिला रायगढ़ (छ.ग.) के निवासी ने अथर्ववेद विषय से आचार्य परीक्षा में श्री सम्पूर्णान्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी उ.प्र. के दीक्षान्त समारोह में स्वर्णपदक प्राप्त किया है । यह दीक्षान्त समारोह दिनांक 31-12-22 को विश्वविद्यालय परिसर में कुलाधिपति माननीया राज्यपाल श्रीमती आनन्दी बेन पटेल जी के सान्निध्य में विश्वविद्यालय के कुलपति सहित सभी आदरणीय प्राध्यापकगणों की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ । श्री सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय काशी में अथर्ववेद से आचार्य एम.ए. में स्वर्णपदक प्राप्त होने पर अग्निदूत परिवार एवं छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बहुत-बहुत बधाई ।

घोषणा-पत्र

(फार्म-4 नियम-8)

• प्रकाशन का स्थान	-	दुर्ग (छ.ग.)
• प्रकाशन की अवधि	-	मासिक
• भाषा	-	हिन्दी
• मुद्रक का नाम	-	आचार्य अंशुदेव आर्य छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)
क्या भारत का नागरिक है	-	हाँ
• प्रकाशक का नाम	-	आचार्य अंशुदेव आर्य छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
क्या भारत का नागरिक है	-	हाँ
• सम्पादक का नाम	-	आचार्य कर्मवीर
क्या भारत का नागरिक है	-	हाँ
पता	-	छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)
• उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के सांझेदार या हिस्सेदार है।	-	छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

मैं आचार्य अंशुदेव आर्य प्रधान, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरे अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य है ।

हस्ताक्षर
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

"अग्निदूत" के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र 'अग्निदूत' के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क 100/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय में भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रुप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे । जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क 800/- रु. भेजें । इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें । अन्यथा इस मास से 'अग्निदूत' भेजना बंद कर दिया जायेगा । पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें । छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाउन्ट नं. 32914130515 आई.एफ.एस.सी. कोड **SBIN0009075** कोड नं. है । जिसमें आप बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4031215 द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत करा सकते हैं । 'अग्निदूत' मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं ।

कार्यालय पता :- 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग,) 491001 फोन : 0788-4031215

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर में सम्पन्न 74वाँ गणतन्त्र दिवस समारोह की झलकियाँ

CHH-HIN/2006/17407

फरवरी 2023

डाक पंजी.छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2021-23

प्रेषक :

"अग्निदूत" हिन्दी मासिक पत्रिका,
कार्यालय–छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/1-170/CORR/CH-4/2019-20-21

तुलाराम आर्य कन्या गुरुकुल आश्रम गोहड़ीडिपा (राजपुर) की प्राचार्या श्रीमती ज्योति सतपथी द्वारा मातृश्री काशी बा हरिभाई चेरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री केशुभाई हरिभाई गोटी सूरत गुजरात से औचक निरीक्षण में पधारे श्रीमान् जादव भाई जी एवं श्रीमान् विनोद भाई जी का तिलक एवं पुष्पाहार से स्वागत करते हुए साथ में संस्था प्रमुख आचार्य अंशुदेव आर्य

अतिथियों का स्वागत करते हुए–प्राचार्या

संस्था प्रमुख का स्वागत करते हुए– प्राचार्या

तुलाराम आर्य कन्या गुरुकुल आश्रम गोहड़ीडिपा (राजपुर) की छात्राएँ

दीक्षान्त समारोह में पंकज भारद्वाज ने प्राप्त किया "स्वर्ण पदक"

महामहिम राज्यपाल, उ.प्र.

सम्पादक–प्रकाशक–मुद्रक : आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।